—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अगस्त, 2004 वर्ष 3 अंक 6

आजाद जिन्दगी

दुन्या को कम हासिल करो तो आजाद जिन्दगी होगी, गुनाह कम करो तो मौत आसान होगी।
(उमर फ़ारूक़ रज़ि०)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

- जब मुल्क आज़ाद हुआ — सम्पादकीय 3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
- हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नज़र में — मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी 7
- स्वतंत्रता दिवस — मो० हसन अंसारी 9
- प्यारे तिरंगे शान तेरी — पद्य 10
- मश्रिके वुस्ता में मग़्रिबी साम्राज्य ... — मौ० मु० राबे हसनी 11
- हम्दे बारी तआ़ला — मौ० मु० सानी ह़सनी 12
- तारीखे दावत व अज़ीमत — रूपान्तर गुफरान नदवी 13
- कान के कच्चे — मौ० मु०खालिद नदवी 18
- प्रजा और शासक .... — डा० मु० इज्तिबा नदवी 19
- प्रथम स्वतंत्रता संग्रामी — हबीबुल्लाह आज़मी 21
- लड़कियों की तालीम — मु० इस्हाक 22
- समाज की एक बुराई बेजा तलाक — आरिफ़ अ़ज़ीज़ 24
- सामाजिक जीवन में खुदा के खौफ की कमी — मौलाना मुहम्मद राबे नदवी 25
- इस्तिखारे की नमाज़ — इदारा 27
- आपकी समस्याएं और उनका हल — मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी 28
- शयातीन जिन्न — अबू मर्गूब 30
- नबवी इलाज — रूपान्तर गुफरान नदवी 32
- पवित्र जीवन कैसे व्यतीत करें — मुतीउर्रहमान औफ़ 34
- उम्मत की बीमारी और उसका इलाज — अब्दुल मुईद नदवी 36
- तौबा की अहमियत — ईशा अलीग 37
- इमाम अहमद बिन हंबल — मु० अहसन 37
- किताबों का परिचय — गुफरान नदवी 38
- सत्कार होना चाहिए — हैदर अली नवदी 39
- तन मन धन सब अर्तित है — कारी हिदायतुल्लाह सिद्दीकी 39
- अन्र्राष्ट्रीय समाचार — हबीबुल्लाह आज़मी 40

□□□

जब मुल्क आज़ाद हुआ

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

१९४७ में मैं सातवें दर्जे में पढ़ता था। तब सातवां दर्जा मिडिल कहलाता था और मिडिल पास आसानी से प्राइमरी स्कूल का टीचर हो जाता था। ब्रिटिश हुकूमत थी। ग़ैर मुल्की हुकूमत का निज़ाम इतना कड़ा था कि सरकारी स्कूलों के तलबा या टीचर्स तहरीके आज़ादी (स्वतंत्रता आन्दोलन) से बहुत दूर रहते थे। इस लिये हम तलबा इस बारे में कुछ न जानते थे। हमारे एक उस्ताद थे मुंशी शिवनारायण उन्होंने छठे दर्जे में हम लोगों को तारीख़ पढ़ाई थी। वह कभी कभी अपना दर्जा, क्लास रूम से निकल कर एक पकड़िया के पेड़ के नीचे लगाते । कहते किताब बन्द कर दो फिर उस रोज़ वह आज़ादी आन्दोलन के बारे में बताते। इस तरह हम लोगों ने छुप छुप कर आज़ादी के बारे में कुछ सुना। फिर भी हम लोग उस दिन के इन्तिज़ार में थे जिस दिन एअ्लान हो कि मुल्क आज़ाद हो गया।

आख़िरकार वह दिन आ ही गया और १५ अगस्त १९४७ ई० का सूरज निकला। आज तो सभी असातिज़ा (टीचर्स) बदले हुए थे। हर तरफ़ से हिन्दोस्तान ज़िन्दाबाद, महात्मा गांधी ज़िन्दाबाद, भारतमाता की जय हो, के नारे लग रहे थे। जुलूस निकल रहे थे। मिठाइयां बंट रही थीं। टीचर्स के मुंह के ताले खुल चुके थे। तक़रीरें हो रही थीं। जिस उस्ताद को मौक़अ मिलता अंग्रेजों के ज़ुल्म और ग़ुलामी की बुराई पर धुंवा धार तक़रीर करता महात्मागांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और दूसरे लीडरों की कोशिशों और क़ुर्बानियों को उजागर करता फिर आज़ादी पा लेनी की ख़ुशी के इज़हार में लफ़्ज़ों के साथ न दे सकने की मुश्किल बताते हुए मुजस्सम ख़ुशी बन जाता पब्लिक नारों से उस का दिल बढ़ाती। खूब ख़ुशियां मनाई गईं नारे लगाते लगाते हम लोगों के गले बैठ गये थे।

जब मुग़ल दौर के ज़वाल (पतन) पर अंग्रेज़ों की कम्पनी ने मुल्क पर अपना सिक्का जमाया तो अगर्चि हर हिन्दोस्तानी को बुरा लगा लेकिन मजबूरियां थीं। मुख़ालिफ़त में अन्दर ही अन्दर लावा पकता रहा जो १८५७ में ज़ोर शोर से फटा लेकिन वाए नाकामी, यह कोशिश बदनज़्मी का शिकार हो गई अब ब्रिटिश हुकूमत का राज था। मलिका विक्टोरिया, एडवर्ड हफ़्तुम, जार्ज पंजुम, जार्ज शशुम यके बाद दीगरे बर्तानिया के साथ हिन्दोस्तान के भी शासक रहे। उनके वाइसराए और लार्ड हिन्दोस्तानियों पर ज़ुल्म ढाते रहे और यहां की दौलत समेटते रहे, लड़ाओ और हुकूमत करो की पालीसी से हिन्दोस्तानियों में फूट डाल डाल कर अपना उल्लू सीधा करते रहे और हमारे जो बुद्धिजीवी और लीडर इस के ख़िलाफ़ बोलते उन को जेलों में ठोंसते रहे लेकिन कब तक?

रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद
सुर्ख़रू होता है इन्सां ठोकरें खाने के बाद

१४,१५ अगस्त की बीच की रात में १२ बजे से पहले हाकिम (शासक) अंग्रेज़ों ने भारत छोड़ दिया और मुल्क आज़ाद हो गया। अब वतन की हर चीज़ अहले वतन की हुई। दरया, पहाड़, मैदान, जंगल, समुन्दर सब अपने हुए। जिस तरह पहाड़ों मैदानों और जंगलों की ऊपरी चीज़ें हमारी हुईं

इसी तरह उसके अन्दर की मअ़दन्यात (खनिज पदार्थ) कोयला, लोहा, तांबा, अबरक, चान्दी, सोना, तेल और गैस के भी हम मालिक हुए, जिस तरह समुन्दरों का ऊपरी हिस्सा हमारा हुआ उस के अन्दर पाई जाने वाली मछलियां, मोती, मूंगे आदि भी हमारे हुए। फ़ज़ा (अन्तरिक्ष) भी हमारी हुई।

अब हमारी हुकूमत है, हमारा क़ानून है, तालीमी पालीसी भी हमारी है, तरक़्क़ी के मन्सूबे हम बनाते हैं और बेशक हम ने हर लाइन में तरक़्क़ी की है, साइन्स, टिक्नालोजी, मेडिकल, इंजीनियरिंग, तिजारत (व्यापार) ज़िराअत (खेती) सब में तरक़्क़ी की अगर मुल्क को आज़ादी न मिलती तो यह तरक़्क़ियां मुम्किन न होतीं। लिहाज़ा इस आज़ादी पर जितनी भी खुशी मनाएं थोड़ी है और खुदा का जितना भी शुक्र करें कम है।

हमारे वतन हिन्दोस्तान में एक ज़माने से मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के लोग रह रहे हैं। यहां हिन्दू हैं उन में आर्य समाजी हैं, सनातन धर्मी हैं, बौधी हैं, जैनी हैं, सिख हैं ईसाई हैं और सबसे बड़ी अक़ल्लियत (अल्पसंख्यक) मुसलमान हैं। बेशक इन मज़ाहिब के मानने वालों में मज़हबी इख़्तिलाफ़ात (मतभेद) हैं और कभी कभी यह उन ही इख़्तिलाफ़ात के सबब आपस में लड़ भी गये हैं लेकिन मुल्क को आज़ाद कराने में सबका हिस्सा रहा है और सब ने क़ुर्बानियां दी हैं लिहाज़ा हुकूमत में भी सब का हिस्सा है। और ख़ुदा का शुक्र है कि थोड़ी कमी बेशी के साथ यह हिस्सेदारी बराबर चली आ रही है तभी तो ज़ाकिर हुसैन, अबुल कलाम आज़ाद, फ़ख़रूद्दीन अ़ली अहमद अ़ब्दुल कलाम, ज्ञानी ज़ैल सिंह और मन मोहन सिंह जैसे अल्पसंख्यक मुल्क के ऊंचे मंसबो (पदों) पर फ़ाइज़ (विराजमान) हुए।

हुकूमत का मिज़ाज सेकूलर रखा गया अर्थात भारत की हुकूमत किसी मज़हब की न होगी। क़ानून में हर मज़हब को हक़ दिया जाएगा उस का प्रसनल ला होगा हुकूमत में कोई मज़हब दखील न होगा। कुछ लोगों को धोखा होता है और वह सेकुलर को मज़हब का मुख़ालिफ़ समझने लगते हैं, यह तो कम्यूनिस्ट नज़रिया है। यहां सेकूलर से मुराद है हर मज़हब वाले दूसरे मज़हब वालों के मज़हबी कामों में रूकावट न डालें, हर मज़हब फले फूले लेकिन हुकूमत पर किसी मज़हब का हुक्म न चले। हाकिम चाहे अपनी ज़ात में मज़हबी हो मगर हुकूमत, मुल्की क़ानून से चलाए मज़हब से नही। खुदा का शुक्र है कि आज़ादी मिलने के बाद से यह बात भी अब तक चली आ रही है। मन्दिरों में घन्टे बज रहे हैं, पूजा हो रही है। गुरू द्वारों में सबद, कीर्तन हो रहे हैं, गिर्जाओं में दुआएं हो रही हैं। मस्जिदों में अज़ाने हो रही हैं मगर अदालतों में मुलकी कानून से फ़ैसले हो रहे हैं। इलेक्शन होते हैं तो असम्बली और पार्लीमेंन्ट के मिम्बरों के चुनाव में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई का इम्तियाज़ (भेदभाव) नहीं होता है। हर मज़हब वाला दूसरे मज़हब वाले को जिताता है। सब लोग एक दूसरे के रंज व ग़म में बराबर के शरीक होते हैं। और सब अपने अपने मज़हब पर चलते हैं और सभी इस तरीक़े को पसन्द करते हैं।

लेकिन अफ़सोस कि इसी वतन में कुछ ऐसे लोग भी पैदा हुए जिन्होंने अपने मुहसिन अअ़ज़म (महा उपकारी) महात्मागांधी को क़त्ल कर डाला। यही वह लोग हैं जिन के सबब, जबलपुर,रावड़केला, मुम्बई, गुजरात जैसे इन्सानियत कुश (मानवता बध) फसादात हुए। यही वह लोग हैं जिन्होंने झूठी तारीख़ गढ़ के हिन्दू नवजवानों को मुसलमानों से दुशमनी पर उभारा यह वह हैं जिन्होंने यह झूठ कहते न थके कि ताजमहल और कुतुबमीनार हिन्दू राजाओ की तअ़मीरात (निर्माण) है। औरंगज़ेब हर सुब्ह एक कुन्टल जनेव जलाए बिना नाशता न करता पहली बात तो यह कि इस का भर पूर रद्द (खण्डन) खुद हिन्दू दानिश्वरों ने किया। और दलीलों से साबित किया कि औरंगज़ेब के दरबारियों में हिन्दू भी थे। उस ने कई मन्दिरों को जागीरें दीं। उसके कुछ नविश्ते

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

मुआफ़ी

मुआफ़ करने की आदत डालो। (७:१९९)

भूल चूक आदमी ही से होती है उस को मुआफ़ करना चाहिए, अगर हम अपने क़ुसूरवारों को मुआफ़ करेंगे तो अल्लाह तआला हमारे क़ुसूरों को भी मुआफ़ करेगा।

रसूलुल्लाहसल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स मुआफ़ करता है अल्लाह तआला उसको इ़ज़्ज़त में बढ़ाता है। अबू मसऊ़द सहाबी कहते हैं कि मैं एक समय अपने ग़ुलाम को मार रहा था कि पीछे से आवाज़ आई : जान लो ! जान लो ! मुड़ कर देखा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे : ऐ अबू मसऊ़द ! जितना क़ाबू तुम को इस ग़ुलाम पर है उस से ज़ियादा क़ाबू ख़ुदा को तुम पर है।

हज़रत अ़रवा बिन मसऊ़द ताइफ़ में लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाते थे, दुशमनों ने उनके क़त्ल का इरादा कर लिया। एक दिन उन्होंने सुब्ह़ की अज़ान दी तो क़बीला बनू मालिक के एक शख़्स ने तीर मारा, ख़ान्दान वालों को ख़बर हुई तो हथियार लेकर निकल पड़े। लेकिन हज़रत अ़रवा (रज़ि०) ने कहा कि मेरे लिये जंग न करो। इस्लाह़ के लिये मैं ने अपना ख़ून मुआफ़ कर दिया। उसी ज़ख़्म में हज़रत अ़रवा शहीद हो गये।

बदला

पस जो कोई तुम पर ज़ियादती (अति) करे तुम भी उस के साथ उसी तरह का मुआमला करो । (२:१९४)

इस आयत से दो बातें मा़लूम हुईं। पहली बात तो यह कि हम पर कोई ज़ुल्म किया जाए तो हम को बदला लेने का ह़क़ है। बुराई का बदला बुराई खुला हुआ क़ानून है। हम अपनी ख़ुशी से मुआफ़ कर दें तो यह अच्छी बात ज़रूर है। लेकिन अगर हम बदला ही लेना चाहते हैं तो न हम को कोई रोक सकता है और न इस पर मलामत कर सकता है।

दूसरी बात यह है कि बदला लेने में ज़ियादती न करना चाहिए हम पर जो ज़ुल्म हुआ है उसी के मुताबिक़ बदला भी ले सकते हैं। ज़ियादती करेंगे तो ख़ुदा के गुनहगार होंगे।

नर्मी

तो तुम अल्लाह की रह़मत के सबब उनके लिए नर्म दिल हुए। (३:१५९)

आदमी को अपने कामों में सख़्ती के बजाए नर्मी इख़्तियार करना चाहिए। जो बात की जाए वह नर्मी से, जो समझाया जाये वह सुहूलत से । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा नर्मी वाला है और नर्मी को पसन्द करता है। फ़रमाया जो नर्मी से मह़रूम (वंचित) रहा वह भलाई से मह़रूम रहा। फ़रमाया जिस में तीन आ़दतें होंगी ख़ुदा अपने साये को उस पर फैलाएगा और उसको जन्नत में दाख़िल करेगा। कमज़ोर के साथ नर्मी करना, मां बाप पर मेहरबानी करना, ग़ुलाम के साथ भलाई करना।

एक बार कुछ यहूदी ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आए और कहा : अस्सामु अ़लैकुम यअ़्नी तुम को मौत आए और तुम पर ला़नत हो। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) समझ गईं और जवाब में कहा वअ़लैकुमुस्साम, वल्लअ़्नः यअ़्नी तुम पर मौत आए और तुम पर ला़नत हो। ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सुना तो फ़रमाया आ़इशा ठहर जाओ ख़ुदा तमाम कामों में नर्मी को पसन्द करता है। बोलीं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। उन्होंने जो कुछ कहा आप ने नहीं सुना? फ़रमाया मैंने भी तो कह दिया वअ़लैकुम यअ़्नी तुम पर। देखो ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब तो दे दिया। मगर कहीं सख़्ती का पता नहीं।

(पृष्ठ ४ का शेष)

आज भी बा़ज़ मन्दिरों में मौजूद हैं। उसके काल में रामायण फ़ार्सी में लिखी गई आदि।

मुल्क के दानिश्वरों (बुद्धिजीवों) को चाहिए कि वह ऐसे ग़ैर इन्सानी रुजह़ानों का इस्तेसाल (उनमूलन) करें और अदमे तशद्दुद (अहिन्सा) सेकुलरिज़्म (धर्म निर्पेक्षता) और जमहूरियत (लोकतंत्र) की बुन्यादों पर मुल्क को चलाने की तदबीरें करें और आज़ादी का ह़क़ीक़ी लुत्फ़ लें।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

क़पड़ों के जाइज़ रंग

३१८. हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़त्हे मक्का के दिन काला अमामा (पगड़ी) बांधे ह़रमे पाक में दाख़िल हुए। (मुस्लिम)

३१९. उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि एक दिन सुब्ह़ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ऐसी चादर ओढ़े हुए बाहर निकले जो काले बालों की थी, उस पर (ऊंट) के कजावे बने हुए थे। (मुस्लिम)

तकब्बुर की नहूसत (घमण्ड की बुराई)

३२०. हज़रत अ़ब्दुलाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि जो शख़्स कपड़े को तकब्बुर (घमण्ड) से ज़मीन पर घसीटता हुआ चलेगा क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उस की तरफ़ नज़र नहीं डालेगा इस पर ह़ज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरा कपड़ा लटक जाया करता है जब कि इस का ख़याल रखता हूं कि ऐसा न हो तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम उन लोगों में से नहीं हो जो घमण्ड से ऐसा करते हैं। (बुखारी)

अल्लाह की निअ़मत का इज़हार –

३२१. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे पर अपनी निअ़मत का असर देखना पसन्द फ़रमाता है। (तिर्मिजी)

मर्दों के लिए सोना और रेशम ह़राम है –

३२२. ह़ज़रत मूसा अशअ़री (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रेशमी लिबास और सोना मेरी उम्मत के मर्दों के लिए ह़राम है और उनकी औ़रतों के लिए ह़लाल है। (तिर्मिजी)

मजबूरी में रेशमी कपड़े की इजाज़त –

३२३. ह़ज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत ज़ुबैर और ह़ज़रत अब्दुर्रह़मान बिन औ़फ को ख़ारिश (खुजली) के सबब मक्का मुकर्रमा में रेशम पहनने की इजाज़त दी। (बुखारी व मुस्लिम)

जुमिअ़रात के दिन सफ़र –

३२४. ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गज़व–ए–तबूक के लिये जुमिअ़रात को निकले और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जुमिअ़रात को निकलना पसन्द फ़रमाया करते थे। (बुखारी व मुस्लिम)

तन्हा सफ़र सहीह़ नहीं –

३२५. ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तन्हा सफ़र करने की जो मुश्किलात मुझे मा़लूम हैं अगर लोगों को मा़लूम हो जाएं तो कोई मुसाफ़िर रात को तन्हा सफ़र न करे। (बुखारी)

तीन मुसाफ़िर हों तो एक को अमीर बना लिया जाय –

३२६. ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी और ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तीन आदमी सफ़र में निकलें तो उनको चाहिए कि किसी एक को अमीर बना लें। (अबू दाऊद)

औ़रत का सफ़र मह़रम के साथ हो–

३२७. ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने वाली औ़रत के लिए दुरुस्त नहीं कि एक दिन और एक रात का सफ़र किसी मह़रम के बिना करे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सफ़र का काम हो जाये तो फिर रुकना नहीं चाहिए।

३२८. ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवयत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया सफ़र अ़ज़ाब का एक टुकड़ा है कि वह खाने पीने और सोने का मौक़अ़ नहीं देता। जब तुम में से कोई शख़्स सफ़र का मक़सद पूरा कर ले तो उस को अपने घर वालों के पास लौटने में जल्दी करना चाहिए। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अली हसनी

जन्म से लेकर प्रौढ़ावस्था तक

बच्चे का जन्म और उसके कानों में अज़ान और इक़ामत

किसी मुसलमान के घर में जब कोई बच्चा पैदा होता है, तो सर्वप्रथम परिवार अथवा मुहल्ले के किसी नेक आदमी या खानदान के बड़े बूढ़े के पास लाते हैं, वह उसके दाहिने कान में अज़ान तथा बायें कान में इक़ामत कहता है। यह अज़ान एवं इक़ामत नमाज़ का एक आवश्यक अंग है और बच्चा नमाज़ तो क्या अज़ान एवं इकामत का अर्थ एवं उद्देश्य भी नहीं समझता, सम्भवतः इसका उद्देश्य यह होता है कि सब से पहले उसके कान मे अल्लाह का नाम और उसकी इबादत (उपासना) की पुकार पड़े। ऐसे अवसर पर किसी महापुरुष द्वारा चबाये हुए खजूर या छुहारे का एक अंश बरकत के लिए मुंह में देने का रिवाज है। यह बात खुदा के पैग़म्बर (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के व्यवहारिक जीवन से भी सिद्ध है और यह सुन्नत वहीं से चली आ रही है।

हिन्दुस्तानी मुसलमानों के यहां अपनी अपनी हैसियत एवं क्षमतानुसार बच्चे के जन्म पर बधाई देने और सगे सम्बन्धियों द्वारा अपने हर्ष एवं प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिए वह तरीके भी प्रचलित हैं जो किसी हद तक स्वाभाविक होने के साथ सम्भवतः हिन्दुस्तान के रीति–रिवाज से लिये गये हैं इस लिए कि अन्य देशों और अरब में इसका दस्तूर नहीं देखा। जैसे–कुर्ता टोपी भेजना, इस बारे में भारत के राज्यों एवं क्षेत्रों में विभिन्न तौर तरीके प्रचलित हैं।

बच्चे का अ़क़ीका और उसका तरीक़ा :

जन्म के सातवें दिन बच्चे का अ़क़ीक़ा (मुंडन) करना मुस्तहब है, किसी कारणवश यदि सातवें दिन न हो सके तो चौदहवें दिन और इसी हिसाब से बाद में होता है। यदि बच्चा है तो दो बकरे या बकरियां और अगर बच्ची है तो एक बकरा या बकरी ज़बह किया जाता है और उसका गोश्त गरीबों तथा रिश्तेदारों को बांटा जाता है तथा घर में भी पका कर खाया और खि़लाया जाता है। परन्तु अक़ीक़ा इस्लामी शास्त्रानुसार न फर्ज है न वाजिब। यदि किसी में इतना सामर्थ्य नहीं तो न करे कोई गुनाह।

अ़क़ीक़े का तरीक़ा हिन्दुस्तानी मुसलमानों में सामन्यतः इस प्रकार प्रचलित है कि घर की हैसियत के अनुसार सगे – सम्बधी तथा मित्रगण एकत्र होते हैं, नाई बुलाया जाता है और वह बच्चे के बाल मूंड देता है, इस अवसर पर बालों की तौल के बराबर चांदी या उसके मूल्य के बराबर धनराशि गरीबों में बांट दी जाती है, और यह क्रिया सुन्नत है। अनेक बिरादरियों में नाई को (जो परजे की हैसियत से खानदानों में बटे और इस प्रकार की सेवा के लिए वंशानुक्रमिक रूप से नियुक्त होते हैं) निकट सगे सम्बन्धी कुछ नक्द राशि के रूप में देते हैं, और यह इस प्रकार के लोगों की (जो निर्धारित रूप से वेतन तथा अपने काम की मजदूरी नहीं पाते) आय का एक बड़ा साधन है।

बच्चे का नाम और उसमें इस्लामियत की झलक

सामान्य रूप से ऐसे ही अ़क़ीके के अवसर पर बच्चे के नाम का एलान कर दिया जाता है। बहुधा खानदान के किसी बड़े बूढ़े या मुहल्ले अथवा मस्जिद के किसी विद्वान और नेक आदमी से नामकरण कराया जाता है, या स्वयं मां बाप या उनके बड़े अपनी पसन्द के किसी नाम का चयन कर लेते हैं नाम रखने में हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने संसार के अन्य देशों के मुसलमानों की भांति इस बात का पालन किया है। कि बच्चों के नाम से इस्लामी रंग झलकता हो और नाम ही से समझ लिया जाय कि वह मुसलमान है। मुस्लिम विद्वान इसके अनेक मनोवैज्ञानिक (**Psychological**) लाभ बताते हैं और अनेक ऐसे देशों (जैसे चीन जहां नाम से यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि अमुक व्यक्ति मुसलमान है अथवा गैर मुस्लिम) का उदाहरण देकर उपर्युक्त नाम करण विधि के पालन के महत्त्व पर बल देते हैं, जहां तक इस्लामी शरीअत का सम्बन्ध है इस बारे में शरीअत ने वैधानिक रूप से मुसलमानों को विशिष्ट नामों का पाबन्द नहीं किया है, इस विषय में केवल इतना मार्गदर्शन किया है कि अच्छे नाम वह हैं जिन से खुदा की बन्दगी (अर्थात तौहीद) का प्रदर्शन

हो। अतः हिन्दुस्तान सहित संसार के समस्त देशों में मुसलमानों के अधिकांश नाम वह हैं जो अब्द (बन्दा) से आरम्भ होते हैं। यथा—अ़ब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अब्दुल वाहिद, अ़ब्दुल अहद, अब्दुस्समद, अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, अ़ब्दुल माजिद, अब्दुल मजीद आदि। यह भी जरूरी कर दिया गया कि नाम से शिर्क, अभिमान एवं अहंकार तथा अवज्ञा का प्रदर्शन न होता हो, इसी कारणवश मलिकुलमुलूक और शहनशाह (सम्राटों का सम्राट) के समान शब्दों को नाम के लिए नापसन्द किया गया है।

बरकत तथा नेकनामी हेतु नबियों तथा सहाबियों के नामों को प्राथमिकता

नामों के सम्बन्ध में एक मुसलमान का ध्यान सर्वप्रथम स्वाभाविक रूप से अपने पैगम्बर, उनके महान अनुयायियों एवं साथियों और उनके परिवार के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की ओर जाता है और वह बरकत एवं शकुन हेतु उनके नामों को प्रधानता देता है। इसी लिए हिन्दुस्तान में मुहम्मद तथा अहमद नामों का बाहुल्य है। अनेक स्थानों पर मुहम्मद तथा अहमद दोनों को मिलाकर नाम रक्खा जाता है और एक ही आदमी का नाम "मुहम्मद अहमद" होता है। जिनका अक़ीके़ का नाम मुहम्मद नहीं होता वह भी शुभ मान्यता हेतु अपने नाम से पहले मुहम्मद लाते हैं। उदाहरणार्थ मुहम्मद सईद, मुहम्मद अज़ीज़, मुहम्मद हुसैन आदि। पैग़म्बर साहब के नाम के बाद पुरुषों में सहाबियों तथा अहले बैत और स्त्रियों में पैग़म्बर साहब की बीवियों तथा बेटियों के नाम अधिक प्रचलित हैं।

नामों के सम्बन्ध मे यह बात अरुचिपूर्ण न होगी कि यद्यपि पैगम्बर साहब का वंशागत सम्बन्ध और मुसलमानों का मानसिक, ऐतिहासिक सम्बन्ध इस्माईली शाखा से है, और बनी इस्माईल तथा बनी इसराईल (अरबों तथा यहूदियों) में दूरी तथा मतभेद आरम्भ से चला आ रहा है। परन्तु चूंकि मुसलमानो के अ़क़ीदे (विश्वास) में खुदा के समस्त पैग़म्बर सम्मानीय एवं आदर्णीय हैं और उन पर ईमान लाना(इस का विश्वास कि वे सब खुदा के सच्चे पैगम्बर हैं) अनिवार्य है, इस बात की उपेक्षा करते हुए कि वह इस्माईली शाखा से सम्बन्धित हैं अथवा इसराईली शाखा से। इसी लिए मुसलमान, नामों के बारे में, वंशानुक्रम **(Hereditary)** पक्षपात का शिकार नहीं इसी का परिणाम है कि केवल हिन्दुस्तान में लाखों की संख्या में ऐसे मुसलमान होंगे जिनका नाम इसहाक़ (अलैहिस्सलाम) और उनकी औलाद के नाम पर रखा गया होगा और वह इसहाक़, याकूब, यूसुफ़, दाऊद, सुलैमान, मूसा, हारून, ईसा, इमरान ज़करीया, और यहया कहलाते हैं, और यह सब इसराईली शाखा से सम्बन्ध रखते हैं। इसी प्रकार औरतों में मर्यम् सफूरा तथा आसिया नाम पाये जाते हैं, जो इसराईली शाखा की प्रतिष्ठित एवं सम्मानित स्त्रियों के नाम हैं

वह नाम जिनमें शिर्क की मिलावट है

नामों के सम्बन्ध में भी हिन्दुस्तानी मुसलमान विभिन्न रूप से भारत के विशिष्ट वातावरण, परिस्थिति तथा असाधाराण व्यक्तियों को ईश्वर का अवतार अथवा उसी के समान श्रद्धा रखने की प्रवृत्ति से प्रभावित हुए हैं, और यहां अधिकांश इस प्रकार के नाम मिलते हैं, जो भारतवर्ष के धार्मिक एवं आध्यात्मिक महापुरुषों से सम्बन्धित हैं और वह कभी कभी तौहीद के महत्वपूर्ण विश्वास के विरुद्ध होते हैं उदाहरणार्थ मुसलमान का यह दृढ़ विश्वास है कि जीविका प्रदान करने वाला सन्तान पैदा करने वाला तथा पापों के प्रति क्षमा प्रदान करने वाला एक मात्र खुदा ही है। परन्तु यहां नामों में उपर्युक्त गुणों को अनेक महापुरुषों, वलियों इमामों तथा अहले बैत की ओर सम्बन्धित किया गया है। यथा मदार बख्श, कलन्दर बख्श, साबिर बख्श, अली बख्श, हुसैन बख्श, अब्दुल हसन और अब्दुल हुसैन आदि, जो नाजाइज़ तथा शिर्क है।

घरेलू नुस्ख़े

- अन्डों की पुटिंग बनाते वक्त थोड़े से सूखे लेमू के छिल्के पीसकर मिलाएं अन्डों की बिसान्ध नहीं आएगी।
- दही बड़े तल कर छाछ या दही के पानी में भिगो दें, दही बड़े मज़ेदार बनेंगे।
- रोटियां पकाते वक्त खुशकी के आटे के बजाए मैदा इस्तिअ़माल करें रोटियां सफेद और नर्म बनेंगी।
- चाशनी बनाते वक्त उसमें आधा लीमू निचोड़ दें शेरे का मैल साफ़ हो जाएगा।
- आलू के कबाब बनाते वक्त आलू में थोड़े से उबले चावल मिला दें, कबाब अच्छे बनेंगे।

स्वतंत्रता दिवस
(पन्द्रह अगस्त 2004)

मो० हसन अंसारी

पन्द्रह अगस्त की तारीख हम भारत वासियों के लिए कौमी त्यौहार (राष्ट्रीय पर्व) का दिन है, सन् १९४७ में इसी तिथि को चौदह–पन्द्रह अगस्त की मध्यरात्रि को हम आजाद हुए थे, अंग्रेजों की हुकूमत खत्म, अपना राज कायम। पन्द्रह अगस्त २००४ को हमारी आजादी के सत्तावन साल पूरे हो जायेंगे और उस दिन हम अपना अठ्ठावनवां स्वतंत्रता दिवस मना रहे होंगे। हम सब को यह दिन मुबारक हो। हमारे लिऐ और सारे संसार के लिए यह दिन मंगलमय हो। सुखमय और शान्तमय हो।

पन्द्रह अगस्त ही क्यों? अंग्रेजी शासन के सत्ता परिवर्तन के लिए पन्द्रह अगस्त की तारीख क्यों चुनी गई और यह फैसला किस का था? इस प्रश्न के यूं तो कई उत्तर हो सकते हैं, परन्तु "फ्रीडम ऐट मिडनाइट" अर्थात् "अर्ध रात्रि की आजादी", जो हमारी आजादी विषय पर लिखी गई किताबो में एक महान ग्रन्थ का दर्जा रखती है, के द्वै लेखकों के अनुसार द्वितीय विश्वयुद्ध (१९३९–४५) के दौरान लार्ड माउंट बैटन को इसी तारीख को बर्मा (म्यामार) में एक बड़ी कामयाबी मिली थी, इस लिए सत्ता हस्तान्तरण के लिए पन्द्रह अगस्त की तारीख लार्ड माउंट बैटन ने चुनी थी।

चौदह अगस्त १९४७ की रात में लार्ड माउंट बैटन ने अपने ए०डी०सी० (AIDE-DE-CAMP) को तलब किया और कहा, "मैं अमुक महारानी को सम्मानित करना चाहता हूं, एवार्ड देना चाहता हूं।" एड–डी–कैम्प ने कहा, "लेकिन सर ग्यारह बजकर अट्ठावन मिनट हो रहे हैं,दो मिनट बाद यूनियन जैक उतर जायेगा और उसकी जगह तिरंगा फहरायेगा, आप की सत्ता समाप्त हो जायेगी, दो मिनट में यह कैसे सम्भव है। लार्ड माउंट बैटन ने कहा, "दो मिनट तो बहुत हैं यह तो एक मिनट का काम है। जाओ और इसे करो।"

ए०डी०सी बुद्धिमान था, गया, एक ताम्र पत्र लिया, उस पर लिखा और दूसरे मिनट में लार्ड माउंट बैटन ने उस पर हस्ताक्षर कर दिये। कहते हैं वाइस राय आफ इण्डिया की हैसियत से लार्ड माउंट बैटन का आखिरी काम था जो उन्होंने दो मिनट में अंजाम दिया।

पहला स्वतंत्रता दिवस पन्द्रह अगस्त १९४७ को मनाया गया। देश भर में प्रभात फेरियां निकाली गईं, रैलियां हुईं, जलसे जुलूस हुए। आजादी के मतलावों की टोलियां निकलीं, उनके हाथों में तिरंगा था और वे झूम झूम कर गा रहे थे :

"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा।
शान न इस की जाने पाये,
चाहे जान भले ही जाये।"

इन पंक्तियों के रचियता श्याम लाल गुप्त के बारे में सन् सत्तर की दहाई में जब देश ने आजादी की सिल्वर जुबली मनाई,एक हिन्दी पत्रिका ने "हिसाब चुका दो इस बनिये का", शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया, पर आजादी की भावना से ओत–प्रोत देश भक्त कवि श्याम लाल गुप्त के साथ सम्मान स्वरूप क्या व्यवहार किया गया इसे देशवासी न जान सके।

यौमे आजादी का पहला जश्न जिन हालात में मनाया गया वह असामान्य थे, असाधारण और एबनार्मल हालात से मुल्क दो चार था। रमजान का महीना था, अशान्ति, मार काट, दंगा फसाद का बाजार गर्म था, हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो चुके थे, हिन्दू और मुसमान आपस में लड़ रहे थे। मुल्क में "कियामते सुग्रः" का माहौल था, गान्धी जी, जिन के नेतृत्व में देश आजाद हुआ था, और जिनके लिए कहा गया है :

"दे दी हमें आजादी बिना खडग बिना ढाल
साबरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल।"

पन्द्रह अगस्त १९४७ को वह नोआखाली में थे, और दंगाग्रस्त मुहल्लों में जा जाकर, जान जोखिम में डालकर लोगों को समझा रहे थे, मजलूमों के आंसू पोछ रहे थे, जालिमों का हाथ पकड़ रहे थे, और शान्ति बहाल करने का प्रयास कर रहे थे। यह भातर के उस जियाले सपूत और विश्व के एक महापुरुष की "करनी" थी जिसे आजाद भारत का पूरा एक साल भी न देखने

दिया गया और जिसे ३० जनवरी १६४८ को गोली मारकर हत्या कर दी गई। जो काम अंग्रेज ने कर सके वह "हम" ने कर दिखाया, "इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।"

तब और अब के हालात में बहुत फ़र्क़ है। यूं तो सत्तावन साल की अवधि बहुत होती है, आधी सदी से अधिक, किन्तु नेशन्स के हालात में बहत लम्बी अवधि नहीं। इन सत्तावन वर्षों में बहुत कुछ बदलाव आया, हमारा अपना संविधान बना, लागू हुआ, और उसमें सौ से ऊपर संशोधन हुए, पंच वर्षीय योजनाओं के माध्यम से बहुमुखी विकास हुआ। प्राकृतिक और मानव संसाधनों को प्रयोग में लाया गया उत्पादन बढ़ा सुख–सुविधाओं के साधन बढ़े। जब देश आजाद हुआ भारत की जनसंख्या चौंतीस करोड़ थी, अब हमारी तादाद सौ करोड़ से ऊपर है। खेत खलिहान, यातायात के साधनों, संचार– साधनों, रहन–सहन के तौर तरीकों में तरक्की हुई, हमने चांद पर कमन्द डाल दी, हमारे प्रशिक्षित जवान हवा में परिन्दों की तरह उड़ सकते हैं, पानी में मछलियों की तरह तैर सकते हैं, पर हम जमीन पर इन्सान की तरह चल नहीं सकते। इन्सानियत की बारात बाजे गाजे के साथ, बड़ी धूम धाम से रौशनी के कुमकुमों में भौतिकवाद की चकाचौंध में चली जा रही है किन्तु उसे यह पता नहीं कि इन्सानियत का दूल्हा खड में गिरा पड़ा है और किसी को उसकी सुध तक न रहीं, बिन दूल्हा बारात। सोचें ! यह कैसी अनीति है। ऐसे में हमारा क्या धर्म है ?

जानने वाले जानते हैं कि आज़ादी हासिल करने के लिए आजादी के मतवालों ने बहुत यात्नायें झेलीं, फांसी के तख्ते पर झूल गये, हंसते हंसते जान दी, फतेहपुर जिला में एक इमली के पेड़ पर बावन जियालों को गोली से भून कर उनकी लाशें लटका दी गईं, तब से इस इमली के पेड़ को बावन इमली कहा जाने लगा। न जाने कितनी सुहागिनों ने मांगों के सिन्दूर पोछ डाले, क्या क्या जुल्म नहीं ढाये गये, परन्तु आजादी के मतवाले यही कहते रहे, पं.ब्रजनारायण चकबस्त के शब्दों में :

हुक्म हाकिम का है फ़रियाद ज़ुबानी रूक जाये,
दिल में बहती हुई गंगा की रवानी रूक जाये।
क़ौम कहती है हवा बन्द हो, पानी रूक जाये।
पर यह मुम्किन नहीं यह जोशे जवानी रूक जाये।
हों ख़बर दार जिन्होंने यह अज़ीयत दी है।
कुछ तमाशा नहीं यह क़ौम ने करवट ली है।

स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर हम आजादी के दीवानों की दास्तान को याद करें, और जो आजादी हमें इतनी कुर्बानियों के बाद मिली है उसे अक्षुण (दायम) बनाने के लिए न केवल संकल्प लें बल्कि कुछ करें। सलाम हो उन पर जिन के त्याग और बलिदान ने हमको आज यह दिन दिखाया:–

तुम्हीं से नाम वतन है रौशन,
तुम्हीं से शाने वतन दो बाला,
सलाम करता है ऐ शहीदो !
अंदब से झुक कर तुम्हें हिमाला।"

प्यारे तिरंगे शान तेरी

प्यारे तिरंगे शान तेरी।
कितनी है ऊंचान तेरी।।
ऊंचा तिरंगा रहे सदा।
दबे कहीं ना झुके कभी।।
सत्य मार्ग पर चले सदा।
सुस्त पड़े ना रूके कभी।।
दे यह संदेशा प्रेम का।
प्रेम परस्पर करें सभी।।
भाई भाई बन के यहां।
प्रेम भाव से रहें सभी।।
आर्य समाजी सनातनी।
वैद शास्त्र मिल पढ़ें सभी।।
बौधी हों या जैनी हों।
और यहां के ऋषि मुनी।।
मुस्लिम सिख ईसाई सब।
मिल जुल कर यां रहें सभी।।
मस्जिद मन्दिर गुरू द्वारा।
गिर्जा घर ना गिरें कभी।।
अपने अपने धर्मों पर।
चलें यहां ना लड़ें कभी।।
छोटी छोटी बातों पर।
दंगा यां ना करें कभी।।
लेके तिरंगा हाथों में।
क़दम मिलाकर बढ़ें सभी।।
ज़िन्दा बाद ज़िन्दा बाद।
देश पताके ज़िन्दा बाद।।
ज़िन्दाबाद ज़िन्दाबाद।
प्रेम देश का ज़िन्दाबाद।।

मश्रिके वुस्ता में मग़्रिबी साम्राज्य की रेशादवानी और जुल्म

(मध्य पूर्व में पश्चिमी साम्राज्य का षडयंत्र और अत्याचार)

मौ० मु० राबे हसनी नदवी

मश्रिके वुस्ता (मध्य पूर्व) के इलाकों में खास तौर से पच्छिमी ऐशिया के कई खित्तों (क्षेत्रों) में जो आम तौर से मुस्लिम देश कहलाते हैं दस्यों साल से अमेरिका की साम्राजी और हथया लेने की पालीसी का जो जाबिराना और गै़र जम्हूरी (अत्याचारपूर्ण तथा अलोकतांत्रिक) खेल खेला जा रहा है और कुछ वर्षों से इराक का खित्ता (क्षेत्र) उस का बेदर्दी के साथ निशाना बना हुआ है। इसे सारी दुन्या मान रही है कि इसमें जालिमाना (अत्याचार्य पूर्ण) कार्यवाही अंधाधुन्ध की जा रही है। कुछ दिनों पहले इसी तरह का रवैया (व्यवहार) अफ़गानिस्तान में इख्तियार किया गया था और अब इराक में किया जा रहा है। कमजोर शहरियों (नागरिकों) और बे गुनाह लोगों को सिर्फ वहम (शंका) और गैर मुसद्दिक़ा (अप्रमाणित) शिकायतों पर जेलों में डाल कर उनसे बाजपुर्स (पूछ गछ) करना और उनसे कुछ उन ही के खिलाफ कहलवा लेने के लिए उनको तरह तरह की गैर इन्सानी (अमानवीय) तकलीफें पहुंचाना और फिर ऐसे जालिमाना बरताव पर मजलूमों (पीड़ितों) की तरफ से नागवारी (अप्रियता) तथा इहतिजाज (विरोध प्रदर्शन) किया गया हो तो वहां की बेगुनाह आबादी को सिर्फ बदगुमानी (दुर्भावना) पर बम्बारी से सजा देना फिर उस बम्बारी में मस्जिदों, इबादत खानों, (उपासना घरों) की परवाह न करना तथा मगरिबी ताकतों की अहदे वुस्ता (मध्य काल) की सफ्फ़ाकाना (हिंसात्मक) और जालिमाना रविश (नीति) की याद दिलाता है और इसी से मिलता जुलता तरीका अभी माजी करीब (आसन्न भूत) मगरिब की इस्तिअ़मारी ताकतों (पश्चिमी साम्राज्यवाद) का मश्रिकी मुमालिक (पूर्वी देशों) पर अपनी हुकूमतें जमाए रखने के लिए रहा है इन मगरिबी ताकतों मश्रिकी मुल्कों को बीती तीन सदियों (शताब्दियों) से गुलाम बना रखा था और उनको अपनी गुलामी में बाक़ी रखने के लिए वहां सख्ती और जुल्म का पूरा इस्तिअ़माल किया था। लेकिन आजादी की तहरीकों (आन्दोलनों) के असर से आखिर कार इन मुल्मों को जाहिरी तौर पर आजाद किया।

उस वक्त तक यह जालिमाना रवैया यूरोपी साम्राज्य की तरफ से तो रहा लेकिन अमेरिका की तरफ से न था। जिस की वजह से अमेरिका को आजादी और जमहूरियत (लोकतंत्र) का नुमाइन्दा समझा जाता रहा लेकिन अमेरिका को जब अपनी इक्तिसादी (आर्थिक) और सियासी (राजनैतिक) जरूरतों के लिए मश्रिकी मुल्कों के वसाइल (साधनों) से फाइदा उठाने की जरूरत हुई तो उसने पहले तो हमदर्दी (सहानुभूति) का बरताव इख्तियार करके अपने करीब करने का तरीका अपनाया और जब इस से उस की ज़रूरत पूरी न हो सकी तो उसने जब्र व फ़रेब (अति तथा धोखा) के वही तरीके इख़्तियार करना शुरूअ़ किये जो उससे पहले यूरोपीय साम्राज्य ने अपनाए थे और जब मजलूमों (पीड़ितों) ने इहतिजाज किया तो उनके साथ जालिमाना बरताव किया। अमेरिका को इस जुल्म को अपनाने में उनके यहूदियों से भी मदद मिली। अमरीकी यहूदियों का अमरीकी हाकिमों (शासकों) पर बड़ा प्रभाव है। अब से सौ साल पहले यहूदी प्रोटोकाल में यह बात तै हो चुकी है कि अपने कौमी व मज़हबी फाइदों के लिए दूसरी कौमों के फाइदों को खत्म किया जा सकता है। इसी पालीसी को अमेरिका जैसे बड़े मुल्क के जरीअ़े जिस पर यहूदी लाबी का गल्बा (अधिकार) है, अपनाया जाता है।

यहूदियों के पालक अमेरिका की कोशिशों में दो निशाने खुले तौर पर देखे जा सकते हैं एक तो मअ़दनी जखाइर (खनिज भंडारों) के इलाकों (क्षेत्रों) पर कबजा (अधिकार) जमाना ताकि उन जखाइर (भंडार) से फाइदा उठाया जाए। दूसरे यहूदी क़ौमियत की मांगों को पूरा करना और फिलिस्तीन पर उस के नाजाइज (अवैध) कब्जा का मजबूत करने में मदद देना। यहूदियों की मांगों (मुतालबात) में एक फिलिस्तीन और उसके इर्द गिर्द के इलाकों को खाली करके उनको दे देना है, दूसरे वहां यहूदी साम्राज्य क़ाइम करना है। कई हजार साल पहले इस इलाके में यहूदी रहते थे फिर वहां से दूसरी जगहों में चले गये फिर दोबारा आकर बसे फिर वहां से निकाले गये अब उनका कहना है कि उनकी किताबे मुकद्दस में उनके वहां फिर बसने

और हुकूमत करने का वअ़दा है।

यहूदी लोग यह भी चाहते हैं कि उनको दुन्या पर इक्तिसादी (आर्थिक) बरतरी (उच्चता) और ताकत हासिल हो अगर वह खुद यह चीजें हासिल न कर सकें तो अमेरिका के कन्धों पर बैठ कर अपने मक़ासिद (लक्ष्य) हासिल करें। यहूदी परटोकोल के मुताबिक (अनुसार) इन मक़ासिद के लिए गैर यहूदी कौमों के साथ किसी रिआ़यत या हम्दर्दी की जरूरत नहीं मानी जाती बल्कि इस के लिए जब्र व ज़ुल्म के सभी मुम्किन तरीके अपनाने में कोई हरज नही।

इस वक्त अमेरिका में जो पालीसी चल रही है उस में खुद अमेरिका के साम्राज्य और इस्तिहसाली (बलपूर्वक प्राप्त कर लेना) मकासिद (उद्देश्य) तो हैं ही उन के साथ यहूदियों के इरादों की रिआयत भी साफ साफ देखी जा सकती है। जबकि अमेरिका एक ईसाई मुल्क है और ईसाई मजहब के मानने वालों और यहूदी मजहब के मानने वालों के बीच मजहबी लिहाज से बड़ा फर्क है इस लिए कि यहूदी हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में बड़ा गन्दा अकीदा रखते हैं और उन्होंने अपनी जानकारी में इसी सजा में उनको सूली पर पहुंचा दिया था हालांकि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के पसन्दीदा बन्दे और नबी थे मगर ईसाई लोग उन को नबी से आगे का भी दर्जा देते हैं। ईसाइयों और यहूदियों के बीच दूरी के और भी अस्बाब हैं। लेकिन इस ज़माने में दोनों के सामने मुसलमान कौम है लिहाजा दोनों मज़हब वाले मुसलमानों के मुकाबले के लिए एक हो गये। ईसाइयों की मुसलमानों से दुशमनी सलीबी जंगों के जमाने से चली आ रही है और कुछ तअ़ज्जुब नहीं कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ बहुत पहले से प्लानिंग की जा रही हो इस लिए कि बीती दो तीन सदियों पहले से पूर्वी देशों में पश्चिमी देशों की रेशा दवानिया (षडयंत्र) शुरूअ हो चुकी थी। जो बराबर बढ़ती रहीं यहां तक कि मश्रिकी मुमालिक (पूर्वी देशों) पर उन का कब्जा (अधिकार) हो गया था। और अब जब कि यह पूर्वी देश देखने में आजाद हैं फिर भी मगरिबी मुल्कों के हाथों में है। जिस के नतीजे में जब तब वह अपनी खुद गरजाना और जालिमाना कार्यवाहियां इस तरह करने लगते हैं जैसे बच्चे खिलौने से खेल करते हैं।

इस वक्त खास तौर पर जो मुल्क अमेरिका के जुल्मों के शिकार हैं अब उनका सब्र का पैमाना बह चला है और वह सख़्ती से मुकाबला कर रहे हैं इन्शा अल्लाह इन जालिमों को उनके सामने झुकना होगा। जुल्म की एक हद होती है। जिस पर अल्लाह तआला की तरफ से भी जालिम को सजा देने और मजलूम (पीड़ित) को सजा से निकालने का फैसला हो जाता है। अल्बत्ता ज़रूरत होती है कि मजलूम अपने रब की रहमत और करम को अपने अच्छे अमलों के जरीअ़े अपनी तरफ खींच सके। वह अपने को जियादा से जियादा नेक बनाने की कोशिश करे तो खुदा की रहमत में देर नहीं होती। रब्बुल आलमीन से दुआ करते हैं कि मजलूमों को जुल्म से नजात अता फ़रमाए और ज़ालिमों को उन के जुल्म की सजा दे। आमीन।

ooooo

ह़म्दे बारी तआ़ला

मौ० मुह़म्मद सानी ह़सनी

ए खुदा तू अ़ज़ीज़ और जब्बार है
मुतकब्बिर है तू और सत्तार है
तू है ख़ालिक़ तुझे ख़ल्क़ से प्यार है
तू है बारी मुसव्विर है ग़फ़्फ़ार है
तेरे क़ह्हारो वह्हाबो रज़्ज़ाक नाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तुझ को फ़त्ताह कहते हैं अहले नज़र
नाम से तेरे खुलता है हर बन्द दर
तू अ़लीम ऐ खुदा तुझ को सब की ख़बर
सब का तू दाद रस सब का तू चारा गर
तू हमेशा से है और रहेगा मुदाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तू मुअ़िज़्ज़ो मुज़िल्लो समीओ़ बसीर
तू ह़कम और अ़दलो लतीफ़ो ख़बीर
चाहे कर तू अमीर और चाहे फ़क़ीर
तू है बेशक अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर
तेरे हाथों में दोनों जहां का निज़ाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तू है क़ाबिज़ जिसे चाहे कंगाल कर
बे ज़रो माल कर चाहे बद ह़ाल कर
तू है बासित जिसे चाहे खुशह़ाल कर
तू है ख़ाफ़िज़ जिसे चाहे पामाल कर
तुझ को कहते हैं राफ़िअ़ ख़वासो अ़वाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तू ह़लीमो अ़ज़ीमो ग़फ़ूरो शकूर
बख़्शता है तू ही इ़ल्मो अ़क़्लो शऊर
तुझ से हर दम है अ़फ़वो करम का ज़हूर
तुझ से पाता है तस्कीं दिले नासबूर
अपने बन्दों को करता है तू शाद काम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

(महापुरुषों का इतिहास)

तारीख़े दावत व अज़ीमत से माखूज़

रूपान्तर–गुफ़रान नदवी

सुधार एवं नवीनीकरण की आवश्यकता और इस्लाम के इतिहास में उनकी निरंतरता

ज़िन्दगी में ठहराओ नहीं –

इस्लाम अल्लाह तआला का आख़िरी पैग़ाम (अन्तिम सन्देश) है, पूर्ण और समस्त रूप में दुन्या के सामने आचुका है। और एलान (घोषित) किया जा चुका है :–

आज के दिन मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल (पूर्ण) कर दिया और तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दी, और दीन (धर्म) के रूप में इस्लाम तुम्हारे लिये पसन्द कर चुका । (पवित्र कुर्आन, सूरः माइदा–३)

एक ओर तो अल्लाह का दीन मुकम्मल है, दूसरी ओर यह वास्तविकता है कि ज़िन्दगी गतिशील और परिवर्तनशील है और इसकी जवानी सदा बहार है–

इस रवां दवां और सदा जवां ज़िन्दगी का साथ देने और उसके मार्गदर्शन के लिए अल्लाहु तआला ने अन्तिम बार जिस "दीन" को भेजा है उसकी बुन्याद अगरचि "अबदी अक़ाइद व हक़ाइक़" सदैव रहने वाले विश्वास एवं वास्तविकताओं पर हैं परन्तु वह दीन ज़िन्दगी से भरा हुआ है और हरकत (उन्नति, विकास) उसकी रग रग में भरी हुई है, उसमें अल्लाह तआला ने यह सलाहियत (क्षमता) रखी है कि वह हर हाल में दुन्या का नेतृत्व कर सके, और हर मन्ज़िल पर परिवर्तनशील इन्सानियत का साथ दे सके। वह किसी विशेष काल की संस्कृति अथवा किसी विशेष काल का आर्किटेक्ट नहीं है जो उस काल की यादगारों (स्मारकों) के अन्दर सुरक्षित हो और अपनी ज़िन्दगी खो चुका हो बल्कि एक ज़िन्दह दीन है जो "अलीम" और "हकीम" कारीगर की कारीगरी का बेहतरीन नमूना है –

"यह ज़ोरावर व बाख़बर (अल्लाह ही) का साधा हुआ है "(पवित्र कुर्आन सूरः यासीन –३६)

"कारीगरी अल्लाह की, जिसने हर चीज़ को मज़बूत किया" (पवित्र कुर्आन, सूरः अल–नमल–८८)

उम्मते इस्लामिया का ज़माना सबसे अधिक परिवर्तनशील है–

यह दीन चूंकि अन्तिम और विश्व व्यापी दीन है और यह उम्मत अन्तिम और विश्व व्यापी उम्मत है, इसलिए यह कुदरती और स्वाभाविक बात है कि दुन्या के विभिन्न इनसानों और विभिन्न ज़मानों से इस उम्मत का वास्ता रहेगा और ऐसी कशमकश (असमंजस) का इसको मुकाबला करना होगा जो किसी दूसरी उम्मत को दुन्या की तारीख़ में पेश नहीं आई, इस उम्मत को जो ज़माना दिया गया है वह सबसे ज़ियादा तग़य्युरात (परिवर्तन) और इनक़िलाबात (क्रान्ति) से भरा हुआ है इसके हालात में जितनी विभिन्नता है, वह तारीख़ के किसी गुज़शतह दौर (भूतकाल) में नज़र नहीं आता।

इस्लाम की स्थिरता और उसके निरन्तर चलने के लिये ग़ैबी इन्तिज़ामात–

माहौल और ज़माने के असरात (प्रभाव) का मुक़ाबला करने के लिये जगह और ज़माने की तबदीली की वजह से ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला ने इस उम्मत के लिये दो इन्तिज़ामात फ़रमाए हैं, एक तो यह कि उसने जनाब रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ऐसी कामिल व मुक़म्मल (पूर्ण समस्त) और जीवित शिक्षाएं प्रदान की हैं जो हर कश्मकश (असमंजस) और हर परिवर्तन का सरलतापूर्वक मुक़ाबला कर सकती हैं और उनमें हर काल की समस्याओं और कठिनाइयों को सुलझाने की पूरी क्षमता विद्यमान है। दूसरे उसने इसका जिम्मा लिया है (और इतिहास इसका साक्षी है) कि वह हर जमाने में इस दीन को ऐसे जीवित व्यक्ति प्रदान करता रहेगा जो इन शिक्षाओ को जीवन में स्थानांतरित करते रहेंगे, और सामूहिक और व्यक्तिगत रूप में इस दीन को ताज़ा करते रहेंगे और उम्मत को काम में लगाए रखने में इस दीन में ऐसे व्यक्तियों को पैदा करने की जो क्षमता और शक्ति है उसका इससे पहले किसी दीन से इज़हार (प्रकट) नहीं हुआ, और उम्मत विश्व इतिहास में जैसी

मरदुमख़ेज (पुरुषोत्पादक) साबित हुई है, दुन्या की कौमों और उम्मतों में इसकी कोई नज़ीर (दृष्टांत) नहीं मिलती, यह केवल संयोग वश नहीं बल्कि इन्तिज़ामे खुदावन्दी (खुदाई व्यवस्था) है कि जिस ज़माने में जिस योग्यता और शक्ति के व्यक्ति की आवश्यकता थी और ज़हर को जिस "तिरयाक़" (औषधि) की आवश्यकता थी वह इस उम्मत को प्रदान हुआ।

इस आवश्यक प्रस्तवना के बाद इस्लामिक इतिहास के महा पुरूषों का वर्णन किया जा रहा है –

प्रथम शताब्दी का सुधारात्मक प्रयास और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० :

ख़िलाफ़ते राशिदा के समाप्त होने के बाद बनूउमय्या का शासन काल प्रारम्भ हुआ जो वास्तव ये इस्लामी से ज़ियादा अरबी शासन था, जिसमें अरबी जाहिलीयत की बुराइयां उभर आईं, राष्ट्रीय गर्व और घमण्ड क़बाइली जत्था बन्दी, नाम और शुहरत, कामों का आधार बना बैतुलमाल (सरकारी ख़ज़ाना) का नाजाइज़ प्रयोग, कवियों और चापलोसी करने वाले दरबारियों पर पानी की तरह दौलत बहाना, गाने बजाने का शौक़ प्रशासन वर्ग की बेदीनी पूरे इस्लामी समाज को प्रभावित कर रही थी।

ऐसी दुर्दशा को बदलने के लिए शीघ्र सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता थी, कि बनूउमय्या के ख़ानदान में एक खलीफ़–ए–राशिद पैदा हो जो क्रान्तिकारी हो और सुधारक हो, यह ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के रूप में आया उन्होंने जैसे ही शासन की बागडोर संभाली, सर्वप्रथम उन कार्यकर्ताओं को पदच्युत किया जो अन्याई और अत्याचारी थे, और ख़ुदा से डरने वाले नहीं थे, उनके सामने शाही शान व शौकत का जो सामान प्रस्तुत किया गया, उसे उन्होंने बैतुलमाल में दाख़िल कर दिया और उसी समय से उनका चरित्र बदल गया, अब वह सुलैमान बिन अब्दुल मलिक के उत्तराधिकारी न थे बल्कि अमीरूल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के उत्तराधिकारी थे, लौंडियों और बांदियों को इन्कुवाइरी के बाद उनके ख़ानदानों और शहरों को वापस कर दिया, अत्याचारों का न्याय किया, अपनी मजालिस (सभा) को जिसने क़ैसर व किसरा के दरबार का रूप धार लिया था, सुन्नत और खिलाफ़ते राशिदा के नमूने पर सादह और सुन्नत के अनुकूल बना दिया, अपनी जागीर मुसलमानों को वापस कर दी, बीवी का ज़ेवर बैतुल माल में दाख़िल किया, उन्होंने ऐसी ज़ाहिद्वाना ज़िन्दगी (संयमशील जीवन) अपनाया, जिसका उदाहरण सम्राटों के यहां तो किया, फ़क़ीरों और दरवेशों के यहां मिलना मुश्किल है, लिबास में ऐसी कमी की, कि बाज़ औक़ात कुर्ता सूखने के इन्तिज़ार में जुमअः में देर से पहुंचना होता, बनूउमय्या जो सारी सल्तनत को अपनी जागीर और बैतुल माल को अपनी मिलकियत समझते थे, अब अपना नपा तुला हिस्सा पाते, खुद उनके घर का यह हाल था कि एक मरतबः अपनी बच्चियों से मिलने गए तो देखा जो बच्ची उनसे बात करती है वह मुंह पर हाथ रख लेती है, वजह पूछी तो मालूम हुआ कि उन बच्चियों ने आज सिर्फ़ दाल और प्याज़ खाई है, रोकर फ़रमाया कि क्या तुम इस पर राज़ी हो कि तुम तरह तरह के अच्छे खाने खाओ और तुम्हारा बाप जहन्नम जाए, यह सुनकर वह भी रो पड़ीं, उस वक़्त जब कि वह रूए ज़मीन की सबसे बड़ी सल्तनत के हुक्मरां (शासक) थे उनकी ज़ाती मिलकियत का यह हाल था कि बावजूद शौक़ के हज का खर्च उनके पास न था नौकर से जो उनका सच्चा साथी था, पूछा कि तुम्हारे पास कुछ है? उसने कहा कि दस बारह, दीनार, कहा कि इसमें हज कैसे हो सकता है? उसके बाद एक बड़ी ख़ानदानी मालियत आई तो नौकर ने मुबारक बाद दी और कहा कि हज का सामान आ गया, फ़रमाया हमने इस माल से बहुत दिनों फ़ाइदा उठाया है, अब यह मुसलमानों का हक़ है, यह कह कर उसको बैतुल माल में दाख़िल कर दिया।

उनके दो समय खाने का हिसाब दो दरहम दैनिक से अधिक न था, एहतियात (सतर्कता) का यह आलम था कि अगर सरकारी शमअ़ जल रही होती और कोई उनकी ख़ैरियत (हाल) मालूम करने लगता या व्यक्तिगत बात चीत प्रारम्भ कर देता तो तुरन्त उसे बुझा देते और अपनी निजी शमअ़ (दीपक) मंगवाते, और बैतुलमाल के बावर्ची खाना (रसोई घर) में गर्म किये हुए पानी से ग़ुस्ल (स्नान) करना भी गवारह नहीं था बैतुलमाल के मुश्क (कस्तूरी) का सूंघना भी उन्हें गवारह नहीं था। उनकी एहतियात (सतर्कता) तनहा अपनी ज़ात तक सीमित न थी, बल्कि वह अपने शासन के ज़िम्मेदारों को भी एहतियात का सबक़ देते थे और उनसे आशा करते थे कि वह भी शासन के मुआमले में उन्हीं के समान

सतर्क और मितव्ययी (कम खर्च) होंगे, मदीने के राज्य पाल अबू बक्र बिन हज़्म ने सुलैमान बिन अब्दुल मलिक (पूर्व शासक) को प्रार्थना पत्र दिया था कि नियमानुसार उन को मोमबत्तियां और क़िन्दीले (दीप पात्र) मिलनी चाहिए सुलैमान के देहान्त के बाद यह परचा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० के सामने आया, आपने लिखा कि अबू बक्र मुझे याद है कि तुम इस पद पर आने से पहले जाड़े की अंधेरी रातों में बिना शमअ और मोमबत्ती के निकलते थे, तुम्हारी वह हालत इस हालत से बेहतर थी, मेरे खयाल में तुम्हारे घर की मोमबत्तियां और किन्दीलें काफ़ी हैं उन्हीं से तुमको काम लेना चाहिए, इसी प्रकार एक प्रार्थना पत्र पर जिसमें सरकारी काम के लिए कागज़ तलब किया गया था, लिखा कि –

"क़लम बारीक करो और गठा हुआ लिखो और एक पर्चे में बहुत जरूरतें (आवश्यकतायें) लिख दिया करो, इसलिए कि मुसलमानों को ऐसी लम्बी चौड़ी बात की ज़रूरत नहीं जिससे बिला वजह बैतुल माल पर बोझ पड़े।"

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का क्रान्तिकारी सुधार इस ज़ाहिदाना ज़िन्दिगी (संयमशील जीवन) और तक़वा (गुनाहों से बचना) एहतियात के अलावा उन्होंने शासन की स्प्रिट ही बदल दी, प्रथम और मौलिक क्रान्ति यह थी कि उन्होंने शासन का दृष्टिकोण बदला, उस समय तक शासन महासिल (आय, लाभकर) और ख़िराज (राजस्व कर) प्राप्त करने और ख़र्च करने की एक व्यवस्थापिक संस्था थी, जिसको सर्वसाधारण लोगों के अख़लाक़, अक़ाइद, सीरत, तरबियत, ज़लालत हिदायत (नैतिकता, आचरण, विश्वास पथभ्रष्टा, सच्चाई का मार्ग) से कोई सम्बन्ध नहीं था, पूर्व शासन प्रणाली इसी बिन्दु पर घूमती थी करों का प्राप्त करना और उसका दुरुपयोग करना, परन्तु उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० ने अपने इस प्रसिद्ध एतिहासिक वाक्य से कि –"मुहम्मद सल्ल० दुन्या में हादी (पथ प्रदर्शक) बना कर भेजे गए थे, तहसीलदार बनाकर नहीं भेजे गये थे।' शासन का स्वभाव और दृष्टिकोण परिवर्तित कर दिया, और उसको दुन्यावी हुकूमत के बजाए ख़िलाफ़ते नबूवत बना दिया, उनका समस्त खिलाफत काल इसी वाक्य की चलती फिरती तसवीर थी, उन्होंने राज्य हितों के मुक़ाबले में सदैव सिद्धान्त, नैतिकता और दीन को प्राथमिकता दी और दीनी नफआ के मुकाबिले में शासन के आर्थिक हानि की परवाह नहीं की। यमन में ख़िराज (राजस्व कर) की मात्रा निर्धारित थी, चाहे पैदावार अच्छी हो या बुरी, प्रशासन ने सूचना दी, आपने फरमाया कि पैदावार के अनुसार धनराशि वसूल की जाए, चाहे उसका परिणाम यह हो सारे "यमन" से एक मुट्ठी ग़ल्ला वसूल हो, मैं इस पर राजी हूँ चुंगी सारे साम्राज्य से मुआफ़ कर दी और कार्यकर्ताओं को लिखा कि वह "बख़्स" है, अर्थात कम करना, इस सम्बन्ध में कुर्आन शरीफ में इरशाद है : और लोगों को उनकी चीजें कम मत दो और ज़मीन में फसाद फैलाते न फिरो। (हूद –८५)

चन्द शरअी महासिल के अलावा हर तरह के नाजाइज़ महासिल (कर) और बीसियों टेक्टस जो पूर्व शासकों और कार्यकर्ताओं ने निर्धारित किये थे, मुआफ़ कर दिये, जल और थल के मार्गों को खोलने का आदेश दिया और और हर प्रकार की पाबन्दियां उठा दीं। देश में ऐसे सुधारात्मक काम किये जिनके परिणाम बहुत दूर रस थे, समस्त देश के लिए समान पैमाने नियुक्त किये जिस में अन्तर नहीं हो सकता था, राज कर्मचारियों को व्यापार करने से रोका, बेगार को क़ानूनी तौर पर बन्द किया देश की ज़मीन का बड़ा भाग अमीर लोगों ने और राजपरिवार के लोगों ने शिकार गाह और चरागाह के नाम पर घेर कर बेकार कर दिया था, आदेश दिया कि वह ज़मीन जनसाधारण की सम्पत्ति है, राज कर्मचारियों के तुहफा (उपहार) लेने को वर्जित किया और कहा कि यदि कभी यह तुहफ़ा था तो अब रिश्वत के सिवा कुछ नहीं है, अधिकारियों को आदेश दिया कि साधारण जनता को अपने तक पहुंचने और शिकायत पहुंचाने के पूर्ण अवसर और सहूलतें उपलब्ध करें, हज के अवसर पर एलान होता था कि जो किसी अत्याचार की सूचना अथवा कोई नेक (शुभ) परामर्श देगा, उसको सौ से लेकर तीन सौ दीनार तक पुरस्कार मिलेगा।

सदाचार और व्यवहार की ओर ध्यान :

उस समय तक ख़लीफ़ा केवल शासक और बादशाह होता था उसको लोगों के आमाल और अख़लाक़ की ओर ध्यान देने का समय नहीं मिलता था, और न उनमें इसकी योग्यता थी और न इसको अपना कर्तव्य समझते थे कि वह लोगों को दीनी मशवरे दे, और नसीहत करें और उनके अच्छे बुरे

कामों की देख भाल करे, उमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ ने इस अन्तर को मिटाया, और अपने को वास्तविक रूप में ख़लीफ़ा सिद्ध किया, ख़िलाफ़त की बागडोर हाथ में लेते ही राज कर्मचारियों और सेना अधिकारियों को लम्बे पत्र और आदेश लिखे जो प्रशासनिक से अधिक दीनी और अख़लाक़ी हैं, और उनमें शासन की रूह (सार) से परामर्श और नसीहत की रूह अधिक है एक पत्र में उन्होंने पूर्व इस्लामी जीवन (नुबूवत व ख़िलाफ़त काल) और उस समय के समाज का नक़शा खींचा है और इस्लामी अर्थ व्यवस्था एंवं शासन प्रणाली की व्याख्या की है। उन पत्रों में वह अमीरों और सेनाधिकारियों को समय पर नमाज़ पढ़ने और उनके आयोजन और विद्या के प्रसार और प्रचार का आदेश देते हैं, अधिकारियों को तक़वा (गुनाहों से बचना) शरीअत के अनुसरण की वसीयत फ़रमाते हैं, अपने अपने क्षेत्रों और हलक़ों में इस्लाम की दअ़वत और तबलीग़ की तरग़ीब (प्रलोभन) देते, हैं और इसी को रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअ़सत (प्रेषण) और इस्लाम के जुहूर (प्रकट) का उद्देश्य बतलाते हैं, उनको "अम्रबिल मअ़रूफ व नहिये अनिल मुनकर" (नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना) के आयोजन की ताकीद (चेतावनी) करते हैं और बतलाते हैं कि इस फरीज़े (कर्तव्य) के छोड़ देने की क्या हानिकारियां हैं और इसका क्या बवाल (विपत्ति) पड़ता है? राजकर्मचारियों को दण्ड देने में एहतियात और संतुलन से काम लेने की ताकीद करते हैं इस्लाम दण्ड विधान की व्याख्या करते हैं फिर साम्राज्य के सामान्य नागरिक ख़राबियों और अनैतिकता की ओर ध्यान देते हैं, नोहागरी (मृत्य गाथा) और जनाज़े में औरतों के साथ जाने को बन्द करते हैं। परदे की ताकीद करते हैं क़बाइली असबीयत (पक्षपात) की निन्दा करते और उसे रोकते हैं नबीज़ (एक प्रकार पेय टानिक) के प्रयोग में बड़ी बेएहतियाती शुरू हो गई थी लोग उसके ज़रिये नशा और शराब तक पहुंच गये थे। जिससे समाज में दुराचार और दुर्व्यवहार फैल रहा था, उसकी हदबन्दी और व्याख्या की।

हदीस नबवी के संकलन और सुन्नत के प्रचलन में विशेष ध्यान दिया, अबू बक्र बिन हज़्मा जो एक बड़े आलिम थे उनको हदीस के संकलन की ओर ध्यान दिलाया और लिखा – "नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो कुछ हदीसें तुमको मिलें उनको लिखित रूप में ले आओ, इसलिए कि मुझे डर है उलमा रूख़सत हो जाएंगे और इल्म मिट जाएगा।"

इस सम्बन्ध में केवल उलमा ही को नहीं बल्कि राज अधिकारियों और विख्यात उलमा को प्रायः इस आवश्यकता की ओर उनका ध्यान आकृषित कराया और गशती फ़रमान जारी किया कि : "रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसें ढूंढ ढूंढ कर एकत्र करो।"

इसी के साथ उलमा के वज़ाइफ (वृत्ति) नियुक्त किये कि वह एकाग्र हो कर लीनता के साथ विद्या का प्रसार और शिक्षा का काम कर सकें, वह स्वयं बड़े आलिम थे, उन्होंने स्वतः फराइज़ और सुनन की तशरीह (व्याख्या) की और ध्यान दिलाया, ख़िलाफ़त के प्रारंभिक दिनों में एक गश्ती फ़रमान (घूमने वाला आदेश) जारी किया जिसमें फ़रमाते हैं कि –

इस्लाम के कुछ हुदूद, क़वानीन और सुनन हैं जो उन पर अमल करेगा उसके ईमान की तकमील होगी और जो अमल नहीं करेगा उसका ईमान नामुकम्मल (अपूर्ण) रह जाएगा, यदि जिन्दगी ने साथ दिया तो मैं इसकी शिक्षा दूंगा और तुम्हें उन पर चलाऊंगा, यदि इससे पहले मेरा समय आ गया तो मैं तुम्हारे बीच रहने पर कुछ ऐसा लोभित भी नहीं हूँ।

उन्होंने केवल मुसलमानों के सुधार और इस्लामी शरीअत का निफ़ाज़ काफ़ी नहीं समझा बल्कि उन्होंने ग़ैर मुस्लिमों में इस्लाम की इशाअ़त की तरफ़ भी खुसूसी तवज्जुह की और इसमें उनको अपने सिदक़ (सच्चाई) एख़लास (निःस्वार्थ) की बरकत और अपनी ज़िन्दगी और अमल से इस्लाम की उचित और प्रभावपूर्ण प्रतिनिधित्व के क़ारण बहुत सफलता प्राप्त हुई – बिलाज़री (प्रसिद्ध इतिहासकार) ने फ़ुतूहुल बुलदान में लिखा है :–

"उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने भारत वर्ष के राजाओं को सात पत्र लिखे और उनको इस्लाम और आज्ञा पालन की दअ़वत दी और वअ़दा किया कि यदि उन्होंने ऐसा किया तो उनको अपने साम्राज्यों पर बाक़ी रखा जाएगा और उनके अधिकार और कर्तव्य वहीं होंगे जो मुसलमानों के हैं," उनके आचरण और चरित्र स्वभाव की सूचनाएं वहां पहले पहुंच चुकी थीं, इस लिए उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया और अपने नाम अरबों ही के नाम पर रखे।

उन्हीं के ख़िलाफ़त काल में

मराकश और ख़ुरासान के लोगों ने इस्लाम कुबूल किया और बरबर कौमों में इस्लाम पहुंचा।

सुधारात्मक कामों का प्रभाव और उनकी प्रतिकिया

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के आर्थिक सुधार एवं संशोधन बन्दिशों और शासन प्रणाली में शरअ़ी और अख़लाकी पाबन्दियों से शासन को आर्थिक घाटा और नागरिकों को नई कठिनाइयों का सामना नही करना पड़ा बल्कि देश वैभव शाली और सम्पन्न हो गया, ज़कात कुबूल करने वाला दूढने से नहीं मिलता था– यहया बिनसईद कहते हैं कि मुझे उमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ ने अफरीक़ा जक़ात की तहसील वसूली पर नियुक्त किया मैंने ज़कात वसूली की परन्तु तलाश के बावजूद एक मुहताज आदमी नहीं मिला जिसको ज़कात अदा कर सकूं इस लिए कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने सबको मालदार बना दिया था, अन्त में कुछ गुलाम खरीद कर आज़ाद किये और उन को मुसलमानों की सर–परस्ती में दे दिया।

वाह्य रूप में जो बरकतें सामने आईं उनके अतिरिक्त बड़ी क्रान्ति यह आई कि लोगों का रूजहान (प्रवृत्ति) बदलने लगा, क़ौम के मिज़ाज (स्वभाव) और मज़ाक (रूचि) में परिवर्तन आने लगा, उनके ज़माने के लोग कहते हैं, कि जब हम लोग वलीद के ज़माने में एक जगह बैठते तो आपस में भवन के बनाने और उनके निर्माण शैली पर बात करते इस लिए कि वलीद की रूचि निर्माण भवन में थी और उसका प्रभाव पूरे देश पर पड़ रहा था, सुलैमान खानों और औरतों का शौक़ीन था, उसके ज़माने में जन सभाओं में बातचीत का विषय यही था, परन्तु उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़माने में नवाफ़िल, ताअ़ात, साधारण जन सभाओं में वार्तालाप का विषय बन गया था, जहां चार आदमी इकट्ठा होते तो एक दूसरे से पूछते कि रात को तुम्हारा क्या पढ़ने का मअ़मूल (नियम) है तुमने कितना कुर्आन याद किया तुम कुर्आन कब ख़त्म करोगे, और कब खत्म किया था, महीने में कितने रोज़े रखते हो।

उनकी ज़िन्दगी का जौहर (सार)

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की ज़िन्दगी का जौहर (सार) उनके समस्त परिश्रम और प्रयास की रूह और उनकी संचालक शक्ति उनका शक्तिशाली ईमान, आख़िरत (प्रलोक) का विश्वास और जन्नत का शौक़ है। उन्होंने जो कुछ किया ख़ुदा के ख़ौफ़ और उसकी रज़ा (प्रसन्नता) के शौक़ में किया, और यही वह शक्ति थी जो अपने समय के उस सब से बड़े बलवान शासक को रूए जमीन के सबसे बड़े साम्राज्य के प्रलोभनों और साधनों के मुक़ाबले में पूर्ण दृढ़ता से जमे रहे, उनके जीवन प्रणाली के विपरीत यदि उन्हें कोई नसीहत करता, अथवा भोग विलास की प्रेरणा देता तो आप सदैव कुर्आन की यह आयत पढ़लिया करते थे –

अनुवाद – "अगर मैंने अपने रब की नाफ़रमानी की तो मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का ख़तरा है।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का देहान्त :

अगर अल्लाह को मन्जूर होता और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को अपने किसी पूर्वज की ख़िलाफ़त की अवधि मिल जाती तो समस्त इस्लामी साम्राज्य में गहरी और चिरस्थायी क्रान्ति हो जाती और मुसलमानों का इतिहास ही दूसरा होता परन्तु बनू उमैया जिनको उस फ़र्द ख़ानदान की ख़िलाफ़त में सबसे बड़ी कुरबानी करनी पड़ी थी ज़ियादह दिनों तक इस क़ष्ट को सहन न कर सके और शीघ्र उनसे छुटकारा प्राप्त करके मुसलमानों को अल्लाह के इस पुरस्कार से वंचित कर दिया।

●●●●●

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

कान के कच्चे

मौ० मुहम्मद खालिद नदवी

"कान के कच्चा" एक महावरा है जो आम तौर पर ऐसे व्यक्ति के लिए बोला जाता है जो हर सुनी हुई बात पर विश्वास कर लेता है और उसके अनुसार उस के दृष्टकोण और विचारों में परिवर्तन होने लगता है। ऐसे लोगों का हाल साधारणतः यह होता है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी बात कुशलता से उसके सामने रख दे चाहे उस की चोट किसी व्यक्ति पर क्यों न पड़ रही हो, उस को स्वीकार कर लेते हैं, उसकी हां में हां मिलाने लगते हैं बल्कि कुछ और अपनी तरफ से बढ़ा करके उसकी शख्सियत को और दाग़दार कर देते हैं। ऐसा व्यक्ति यदि जनसाधारण से सम्बन्ध रखता है तो भी उसके बुरे प्रभाव समाज पर पड़ते हैं और यदि प्रमुख और जिम्मेदार की पोज़ीशन का मालिक होता है तो उसके नकारात्मक प्रभाव भयानक और हानिकारक होते हैं। ऐसे ही व्यक्ति के बारे में हुजूरे अकरम सल्ल० का कथन है–

(अनुवाद) – हर सुनी हुई बात को नकल करना झूठा होने के लिए काफ़ी है।

ज़ाहिर है ऐसी सूरत में खुद को शर्मिन्दा और दूसरों को परेशानी से दोचार होना पड़ता है। जन साधारण में ऐसी स्थिति के चित्रण के लिए यह मिसाल भी खूब मशहूर है – कौवा कान ले गया, कौवा कान ले गया।"

कौवे के पीछे भागे चले जा रहे हैं लेकिन अपने कान तक हाथ लेजाने का कष्ट नहीं कर रहे हैं। आज हमारे समाज की दशा कुछ ऐसी ही होती जा रही है और इसके कारण कितने ही रिश्ते टूटते हैं और शीश–ए–दिल में कितने बाल पड़ते हैं, दोस्तियां ख़त्म हो जाती है और सम्बन्धों के आइने पर गर्द की तह जम जाती है। एक साहब ने एक घटना सुनाई– एक नौजवान की शादी उस की सगी मामूज़ाद बहन से हुई थी किसी कारणवश मामूली तनाव पैदा हो गया। इसी बीच लड़के के गांव के एक तीसरे आदमी ने लड़की के घर यह सूचना पहुंचा दी कि लड़की तुम्हारी आत्महत्या करने जा रही थी, वह तो मैं ने समझा बुझा कर वापस किया अन्यथा वह जान से हाथ धो बैठती। बस यह सुन कर लड़की के मैके के लोग लाठी डंडे के साथ आए और लड़के को मार कर लहूलुहान कर दिया और ज़बर्दस्ती तलाक़ भी ले लिया और लड़की को अपने घर लेकर चले गये। बाद में जब गुस्सा ठंडा हुआ तो सच्चाई मालूम हुई। अब शर्म व पछतावे के सिवा क्या था। कुछ दिनों के बाद उसी लड़की का उसी लड़के से निकाह दो बारा हुआ और फिर उसी घर में आई। इस प्रकार की न जाने कितनी घटनाएं रोज़ाना पेश आती रही हैं जिसके नतीजे में जीवित शरीर आग व खून की भेंट चढ़ते रहते हैं।

कान का जो व्यक्ति कच्चा होता है वह अपने अमल से दो तरह के फ़साद (विकार) का शिकार होता है एक तो वह स्वयं ग़ीबत (पीठ पीछे शिकायत करना) में लिप्त हो जाता है दूसरे यह कि उसके आस पास चापलूस और स्वार्थी लोगो का जमघट हो जाता है जो खुद उसे भी हानि पहुंचाते हैं और अपनी आखिरत खराब करते हैं हालांकि उन्हें याद रखना चाहिए कि इसमें कितनी शदीद वओद (कठोर चेतावनी) आई है अल्लाह के रसूल सल्ल० का कथन है –

अनुवाद – अबू दर्दाअ रज़ि० बयान करते हैं कि नबी–ए–करीम सल्ल० ने फ़रमाया जिस को ऐसे गुण से सम्बद्ध किया जाये जो उस में मौजूद नहीं है ताकि वह उसकी ग़ीबत कर के हानि पहुंचाये तो अल्लाह तआला उसे जहन्नम की आग में उस समय तक रखेगा जब तक कि वह इस बात को साबित न कर दे जो उसने कहा है।"

हदीस शरीफ़ में ऐसे व्यक्ति को काज़िब (झूठा) कहा गया है और झूठ बोलना महा पाप है अतः अपने आप को ऐसे लोगों से बचाने की कोशिश हमेशा करनी चाहिए ताकि इस प्रकार के लोगों को किसी को बहकाने का अवसर न मिले बल्कि वे हतोत्साहित हों और ऐसी आदत से बाज़ आजाएं या फिर अपमानित होकर पवित्र समाज से दूर भाग जाएं।

दुख यह है कि यह बीमारी बड़े लोगो में कुछ अधिक पाई जाने लगी है। मदारिस की चहारदीवारी न इससे सुरक्षित है और न खानकाहों का शुद्ध प्रबन्धन इस वाएरस को दूर कर सका है आवश्यकता इस बात की है कि कोई बात बिना जांच पर्ताल के स्वीकार न की जाये अन्यथा व्यक्ति तो व्यक्ति संस्थाओं, संघटनों की हानि और कार्य क्षमता बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकती है।

अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी

प्रजा और शासक के बीच
बाधा पर पूछ-गछ

डॉ० मु० इज्तिबा नदवी

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का शासन है। अपने गहन सोच विचार और जांच पड़ताल के बाद सहाब-ए-किराम रज़ि० में से नीति की परख रखने वालों, प्रबन्ध कार्य में निपुण और बहुत ही संयमी लोगों को राज्य के कार्यकर्ता, अफसर और गवर्नर नियुक्त किया। इसके बावजूद भी इन्सपेक्शन और निगरानी के लिए एक बोर्ड की स्थापना की, जिसके प्रमुख उच्च कोटि के सहाबी हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि० को बनाया गया। हर मामले को जांचने परखने में, हक एवं न्याय के साथ ख़लीफ़ा के आदेश का पालन कराने में उनकी एक भूमिका है।

अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० की तेज़ निगाहों से गवर्नरों, अफ़सरों और अन्य कर्मचारियों की कोई भी बात छुपी नहीं रह सकती थी। इसके अलावा हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि० अपने कामों में अत्यन्त सतर्क, चौकस व चतुर थे। संयम, नेकी सावधानी और उच्च आचरण व नैतिक मूल्यों के स्तर में तनिक भी कोताही या प्रशासनिक कामों में फारूकी स्तर से थोड़ी भी कमी या सन्देह की सूचना अमीरूल मोमिनीन तक पहुंचते रहते है और अमीरूल मोमिनीन तुरन्त उस पर कार्यवाही करते हैं। इससे पूर्व आप हमस के गवर्नर हजरत सईद बिन आस रज़ि० की घटना पढ़ चुके हैं कि उनके विरुद्ध शिकायत सुनते ही उन्हें तुरन्त बुलवाया और वास्तविकता मालूम हो जाने के बाद अल्लाह का शुक्र अदा किया, कि उनको इतने अच्छे अनुभवी और उच्च दर्जे के नमूने पेश करने वाले लोग मिले। इसी सन्दर्भ में कूफा के गवर्नर की एक शिक्षा प्रद घटना देखिये।

इराक़ के दो शहर कूफ़ा और बसरा अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० के आदेश पर बसाए गए। उनमें अधिकांश वे लोग आबाद किए गए जो इस्लाम में नए नए आए थे। उनकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण की आदर्श व्यवस्था की समस्या भी उनके सामने थी। कूफा और बसरा सीमावर्ती शहर थे और अभी विजयों और इस्लामी दावत का सिलसिला चल रहा था इसलिए कड़े परिश्रम और सतत संघर्ष की ज़रूरत थी। वहां के प्रबन्ध के लिए सैनिक व राजनैतिक दृष्टि से अत्यन्त नेक व दीनदार आचरण वाले व्यक्ति का चयन करना था। सहाब-ए-किराम रज़ि० की बड़ी संख्या में मौजूद थे। मगर फारूकी नजर किसी ऐसे सहाबी की तलाश में थी जो नबी सल्ल० के भी विश्वास व भरोसे के रह चके हों और हजरत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० भी उन के हालात व कार्य कुशलता से संतुष्ट रहे हों, अन्त में हज़रत उमर फारूक की नज़र। एक ऐसी हस्ती पर केन्द्रित हो गयी। वह थे बदर व उहुद की जंगों के मुजाहिद, नबी सल्ल० के निकटतम व प्रिय वफादार, इराक व ईरान के विजेता, कादसिया के अगुवा, उन दस सहाबा में से एक जिनको नबी सल्ल० ने उनके जीवन में ही जन्नती होने की बशारत दे दी थी। यह थे हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०।

अमीरूल मोमिनीन की नजर में कूफ़ा की गवर्नरी के लिए यही सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० उचित व्यक्तित्व के मालिक थें उनमें वे सभी गुण थे जो इस महत्वपूर्ण और संवेदनशील पद के लिए आवश्यक थे। लेकिन खलीफा को यह अन्देशा था कि वे कोई पद स्वीकार करने में बिल्कुल रूचि नहीं रखते। अतः अमीरूल मोमिनीन ने हज़रत सअद से बात चीत की शुरूआत इन शब्दों में कीः

ऐ सअ़द ! ऐ सअ़द की मा के बेटे तुम्हें इस धोखे में न रहना चाहिए कि तुम्हें नबी सल्ल० का मामूं और नबी सल्ल० का सहाबी कहा जाता है, क्योंकि खुदा बुराई से बुराई को नही मिटाता बल्कि बुराई को भलाई से मिटाता है खुदा और इन्सान के बीच रिश्तेदार का नहीं बल्कि आज्ञा कारिता का सम्बन्ध है। खुदा के दीन में उच्च घराना और निम्न घराना, दोनों समान हैं। यदि कोई फर्क है तो वह नेकी और ईशभय के आधार पर है। खुदा की प्रसन्नता उसकी आज्ञा के पालन और उसकी इबादत के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। तुम तो इस बात को अपने समक्ष रख कर अमल

करो जिसको करते हुए नबी सल्ल० को देखा है।

इसके बाद हजरत उमर रज़ि० ने ह़ज़रत सअ़द रज़ि० को कूफ़ा की गवर्नरी का दायित्व सम्भालने के लिए कहा। ह़ज़रत सअ़द रज़ि० ने अमीरूल मोमिनीन के आदेश का पालन करते हुए यह बड़ा दायित्व स्वीकार कर लिया और कूफा चले गये। कूफा के भूगोलिक और राजनीतिक महत्व और वहां की परिस्थितियों के कारण उन पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ गयी थी, लेकिन नबी सल्ल० की संगत व प्रशिक्षण ने उन्हें बड़ा अनुभवी और कुशल बना दिया था। बड़ी सफलता के साथ अपना कार्य शुरू किया इसी के साथ उनका मस्तिष्क इस चिन्ता से खाली न था कि अमीरूल मोमिनीनं हजरत उमर रज़ि० की तेज निगाहें उनके कामों का अवलोकन करती रहती होंगीं। कूफा के हालात, समाज के शरारती तत्वों और वहां के वातावरण को देखते हुए उन्होंने अपने मकान में एक दरवाजा लगवा लिया जिस से लोगों के हर समय आने जाने में रूकावट पैदा हो गई। अब वे हर समय कूफ़ा के लोगों के सामने नहीं रह सकते थे।

अमीरूल मोमिनीन को सूचना मिली कि कूफ़ा के गवर्नर और वहां की जनता के बीच एक बाधा खड़ी हो गयी है। जी हां अब आदमी बिना रोक टोक गवर्नर तक नहीं पहुंच सकता। शिकायत इसकी नहीं कि वे लोगों से क्रूरता व दुष्ट स्वभाव से पेश आते हैं, रिश्वत लेते हैं, कूफा से या अपने मकान से गायब रहते हैं, नहीं, इनमें से कोई बात नहीं थी, केवल धर से बाहर किवाड़ लग जाने से उन से मिलने के लिए दरवाज़े पर दस्तक देनी पड़ती है।

अमीरूल मोमिनीन को जैसे ही यह सूचना मिली अपने सलाहकार बड़े सहाबा के सामने यह मामला रखा। मशवरे के बाद जांच बोर्ड के चेयरमैन हजरत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि० को आदेश दिया कि तुरन्त कूफ़ा जाओ और सअ़द रज़ि० के मकान का दरवाजा उखाड़ कर मदीना ले आओ और देखो इसके अलावा और कोई बात न करना। एक दूसरी रिवायत है कि सअ़द के मकान को आग लगा देना।

ह़ज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने कूफ़ा पहुंचते ही अमीरूल मोमिनीन के आदेश का पालन किया। हजरत सअ़द रज़ि० घबराकर बाहर निकले तो देखा कि अमीरूल मोमिनीन के विशेष प्रतिनिधि खड़े हैं। उनसे कारण पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि अमीरूल मोमिनीन का यही आदेश है।

आपने ख़लीफ़ा के आदेश के आगे अपना सर झुका दिया और ह़ज़रत मुह़म्मद बिन मुस्लिमा रज़ि० से कहा कि वापस जा रहे हो तो रास्ते के लिए कुछ आवश्यक सामग्री ले लो। उन्होंने क्षमा चाही और मदीना के लिए चल दिए। अमीरूल मोमिनीन ने उनको देखते ही पूछा कि गवर्नर कूफ़ा से तुमने कुछ लिया तो नहीं? जवाब दिया मैंने आपके आदेश का पूरा पालन किया है।

अमीरूल मोमिनीन ह़ज़रत उमर रज़ि० ने केवल सावधानी के लिए यह कदम उठाया था। उन पर अविश्वास या उनके चरित्र पर सन्देह नहीं था, अतएव हजरत उमर ने अपने उत्तराधिकारी के लिए जिन छः सहाब–ए–किराम के नाम सुझाए थे उनमें एक नाम हजरत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० का भी था इसके बाद फ़रमाया यदि सअ़द ख़लीफ़ा चुन लिए जाते तो फिर कोई बात नहीं वर्ना मैं अपने बाद के ख़लीफ़ाओं को वसीयत करता हूं कि वह उनके गवर्नर के पद पर नियुक्त कर दें क्योंकि मैंने सअद को कूफ़ा की गवर्नरी में किसी कोताही, बेइमानी या अयोग्यता के कारण अलग नहीं किया था। अतएव अमीरूल मोमिनीन ह़ज़रत उसमान रज़ि० ने ह़ज़रत रज़ि० की वसीयत के अनुसार उनको पूरे इराक का गवर्नर बना दिया और उनकी असाधारण योग्यता व सूझ बूझ से मुसलमानों को बड़ा लाभ पहुंचा।

इस्तिख़ारा

जब किसी जाइज़ काम करने में संकोच हो तो दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर दुआ़ करें कि ऐ अल्लाह अगर इस काम में हमारे लिये भलाई हो तो इस की तौफ़ीक़ फ़रमा अगर इस में हमारे लिए भलाई न हो तो जिस काम में भलाई हो उसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा फिर काम शुरू करें। सुन्नत यह है कि ह़दीस की दुआ़ पढ़ें उसका तर्जुमा भी पढ़ सकते हैं।

Anees Ahmad 0522-2242385(S) 2241117(R)

Famous Foot Wear

Wholeseller and Reteiler, Shoes, Chappal Sandle, Sleeper, Bally etc.

301/11, Saray Bans Akbari Gate, Lukhow

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का मुजाहिद

मोलवी लियाक़त अली

हबीबुल्लाह आज़मी

आज लोग मुजाहिदे आज़ादी मोलवी लियाक़त अली को भूल गए हैं। इन के कारनामों से नौजवान नस्ल अपरिचित है। इतिहास के पन्नों में भी उनका ज़िक्र नहीं मिलता। इलाहाबाद के भी बहुत कम लोग जानते हैं कि यह जियाला सेनानी उन्हीं के शहर में पैदा हुआ था। जिसने स्वतंत्रता की जंग में भाग लेकर इलाहाबाद का नाम रौशन किया था। दुख की बात तो यह है कि पाठपुस्तकों में भी उन का वर्णन नहीं मिलता। एक वर्ग विशेष ने आज़ादी के बाद पूरी कोशिश की कि मुसलमान स्वतंत्रता सेनानियों का नाम इतिहास के पन्नों में न आने पाए जब कि मुसलमानों ने सर्व प्रथम आज़ादी का बिगुल बजाया।

मोलवी लियाक़त अली ५ अक्टूबर १८०७ को चाइल जिला इलाहाबाद में पैदा हुए। वह हिन्दू, मुस्लिम एकता के अनुयायी थे। उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने के बाद अंग्रेजी सरकार की फौज में मुलाज़मत की। वहां भी उनका विचार छुपा नहीं रहा और अनुशासन भंग करने के आरोप में उन्हें फौजी सेवा से निकाल दिया गया। इसी बीच ६ जून १८५७ को बनारस के बाग़ियों ने बग़ावत की घोषणा कर दी। इलाहाबाद में दारागंज में एक मीटिंग हुई और इलाहाबाद के जियालों ने भी मोलवी लियाक़त अली के नेतृत्व में बगावत का झण्डा बुलन्द किया और ७ जून १८५७ को उन को इलाहाबाद का गवर्नर नियुक्त किया गया और फिर उनके नेतृत्व में यहां के स्वतंत्रता सेनानियों ने पूर्ण स्वतंत्रता का एलान कर दिया। इस का वर्णन सालार जंग म्यूज़ियम हैदराबाद में रखी "तारीखे बहादुर शाह" में देखा जा सकता है। उन्होंने दो फ़रमान (आदेश) जारी किये जिसमें उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचार और नाइंसाफी को उजागर किया और उनके ख़िलाफ़ एलानेजंग कया। उन्होंने खुसरो बाग़ को अपनी राजधानी बनाया और चौदह दिन तक उनकी गवर्नरी में आज़ाद हुकूमत काइम रही और इस अवध में इलाहाबाद में फौज दाखिल नहीं हो सकी थी लेकिन अन्त में अंग्रेज कर्नल नील ने उन पर विजय प्राप्त कर ली और मोलवी साहब को इस शर्त पर क्षमा दान देने का प्रस्ताव रखा कि वह अपनी राजनीतिक सरगर्मियां छोड़ दें और अपने आप को केवल धार्मिक गतिविधियों तक सीमित रखें जिसको मानने से मोलवी लियाक़त अली ने इनकार कर दिया। उन्होंने अपने भाषणों मे अंग्रेजों के विरुद्ध बग़ावत में भाग लेने के लिए ललकारा। जिस का नतीजा यह हुआ कि उनको बग़ावत के लिए उकसाने के आरोप में काले पानी की सज़ा सुनाई गई। इसी काले पानी की सज़ा के दौरान उन का देहान्त हो गया।

इस महान स्वतंत्रता सेनानी को आज़ादी के बाद ऐसा भुला दिया गया कि आज यदि इलाहाबाद के पढ़े लिखे नौजवानों से भी पूछा जाए तो शायद ही कोई मोलवी लियाक़त अली के नाम और उनके कारनामों से अवगत हो।

(पृष्ठ २४ का शेष)

संसार की कोई शक्ति मुसलमानों के धार्मिक कानून में कोई हस्तक्षेप (मुदाख़लत) करने का साहस न कर सकेगी। स्पष्ट है कि जब कोई उत्पीड़ित अदालत का दरवाजा खटखटाने की ज़रूरत ही नहीं महसूस करेगा तो अदालत या किसी राजनीतिक पार्टी को क्या पड़ी है कि वह उसके बारे में ग़लत टीका टिप्पणी करे। निकाह़ के खुतबों (अभिभाषणों) में यदि शादी व तलाक़ की विद्याओं पर रोशनी डाली जाए या पवित्र शरीअ़त का उल्लंघन करने वालों के समाजी बाइकाट की मुहिम चलाई जाए तो सम्भव है कि इसका कुछ नतीजा निकले और इस समाजी बुराई में कुछ न कुछ कमी आ सके। इन बुराइयों की मुस्लिम समाज में मौजूदगी बल्कि अधिकता अति दुखद है जिस से बचना हर दशा में आवश्यक है।

निकाह़ से पहले लड़का और लड़की दोनों से इस्तिख़ारा करवाया करें। अच्छा है कि दोनों के बाप भी इस्तिख़ारा कर लिया करें।

लड़कियों की तालीम का मसला

मुहम्मद इसहाक, प्रधानाचार्य

कोई तीन वर्ष पहले की बात है कि लड़कियों की तालीम पर एक आल इण्डिया सेमिनार हैदराबाद जुबली हाल में हुआ था। उसमें मुल्क की मशहूर सोशल वर्कर श्रीमती दुगाबाई देशमुख ने एक दिलचस्प वाकया सुनाया था। सालाना इम्तिहान में भाई फेल हो गया और बहन कामयाब हो गई दूसरे दिन मां और बाप दोनों एक दर्खास्त के साथ हेडमास्टर के पास पहुंचे और ख्वाहिश की कि बहन को फेल करके भाई को तरक्की दी जाये। उसके लिए बहन राज़ी हो चुकी थी।

सालेहा आबिद हुसैन ने मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली की मुख्तसर सवानेह-हयात (जीवनी) बच्चों के लिए लिखी है। इसमें वह एक जगह लिखती हैं कि मौलाना हाली अपनी बड़ी पोती मुश्ताक़ फ़ातिमा को बहुत चाहते थे। जब वह छोटी सी थी तो उस वक्त पानीपत में लड़कियों की तालीम का रिवाज न था। उन्हें सिर्फ कुर्आन शरीफ़ पढ़ना सिखाया जाता था। मगर वह लिखने पढ़ने की बहुत शौक़ीन थी। वह तवे की कालिख की स्याही और लकड़ी का क़लम बनाकर छुप कर आसान उर्दू की किताब से नकल करके लिखना सीख गई। एक दिन उनकी दादी (हाली की भावज) ने देख लिया। ख़फ़ा हुईं और हाली से कहने लगीं "मुबारक हो अब तुम्हारी लड़की खत पत्तर लिखा करेगी खूब खानदान का नाम रौशन होगा।" हाली ने सुना तो हंस पड़े। उस लड़की को खुद लिखना सिखाया। फिर उसके बाद खानदान में लड़कियों की तालीम का रिवाज हुआ। यह बात कोई सौ वर्ष पहले की है। "नई तालीम फैलाने का काम सर सैयद ने किया लेकिन मुसलमान लड़कियों में तालीम फैलाने का काम डिप्टी नजीर अहमद और हाली ने शुरू किया।" उसी ज़माने में अकबर इलाहाबादी लड़कियों की आजादी और तालीम के सख़्त ख़िलाफ थे। उन के अक्सर अशआर में लड़कियों की तालीम व तरक़्क़ी पर गहरा तंज़ मौजूद है —

हामिदा चमकी न थी, तालीम से बेगाना थी।

अब है शमअ़े अंजुमन पहले चिराग़े खाना थी।।

हिन्दुस्तान में मुसलमानों की आबादी बारह तथा पन्द्रह करोड़ बताई जाती है उनकी आधी आबादी (४६ फीसद) औरतों पर मुश्तमिल है। उनमें पढ़े-लिखी औरतें सिर्फ एक फीसद हैं और मुसलमान मर्दों में सिर्फ १६ फीसद पढ़े-लिखे हैं। इस तरह कुल बीस फीसद आबादी पढ़ी लिखी है और अस्सी फीसद अनपढ़ है। दूसरे अलफाज़ में हम यूं भी कह सकते हैं कि मुसलमानों में इल्म व अक्ल का अस्सी (८०) फीसदी खित्ता अभी तक बंजर ही रह गया है। यह बात निहायत अफसोसनाक है कि हमारी निस्फ़ आबादी को पढ़ने लिखने से दूर रखा गया। लड़कियों की तालीम का मसला सैकड़ों वर्ष से हमारी बेदिली, बेतवज्जुही और बेहिसी का शिकार रहा है।

आज भी आप अक्सर मां बाप से लड़कियों की तालीम पर बातचीत करें तो ऐसा मालूम होता है कि लड़कियों के लिए तालीम की कोई ख़ास ज़रूरत नहीं है।

हम क्यों नहीं पढ़ते :

ऊपर की दो मिसालों से यह बात साबित हो जाती है कि हमारे सोचने का ढंग ही निराला है और फिर पुराने ज़माने से जो रवायत (रिवाज) चली आ रही है वह तो लड़कियों की तालीम में जबरदस्त रूकावट है। जिस तरह हम लड़कों की तालीम पर ध्यान देते हैं और उन पर जो कुछ रूपया ख़र्च करने पर तैयार रहते हैं वैसे ही बेटी के लिए न तैयार हैं न ज़रूरी समझते हैं। चन्द एक वजूहात तो हम सब जानते हैं —

१. लड़की की पैदाइश के रोज़ ही से यह फिक्र लाहक़ होती है कि इस पर जो कुछ ख़र्च होगा वह सब पराया है। असल काम तो उसकी परवरिश है और बड़ी हो जाये तो शादी होकर दूसरे घर चली जाये तो यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

२. चन्द लड़कियों का हाल हमें मालूम है। वह छठी और सातवीं जमात तक तो बहुत तेजी से पढ़ती गई उसके बाद स्कूल से ग़ायब रहने लगीं। मालूम हुआ कि घर में छोटे भाइयों बहनों का इज़ाफ़ा हो गया है उनकी देख भाल की ज़िम्मेदारी इन बड़ी बहनों पर आ पड़ी है। धीरे धीरे स्कूल छूट गया। ख़ानदान में अफराद की ज़्यादती से घरबार और चूल्हे का काम बढ़ गया

है। मां का हाथ बटाने के लिए बड़ी लड़कियां होती हैं। बस उनकी तालीम पर ब्रेक लगना शुरू हो गया। यही वजह है कि उनमें बहुत कम मैट्रिक तक पहुंच पाती हैं।

३. सातवें आठवें जमात में पहुंचने तक लड़कियां सयानी हो जाती हैं। मायें गहरी सोच में पड़ जाती हैं। यह जमाना तालीम को तर्क करने या जारी रखने के लिए फैसलाकुन मरहले पर पहुंच जाता है।

४. आज कल तालीम पर ख़र्च भी काफी होता है। स्कूल की फीस, सवारी का खर्च, महंगी कापी–किताबें, यूनीफार्म पर काफी खर्च आता है। जिन खानदानों में चार पांच बच्चे हों तो तरजीह लड़कों की तालीम पर दी जाती है। ग़रीब खानदानों में लड़कियां कुछ न कुछ मेहनत मज़दूरी करके सात आठ साल की उम्र ही से आमदनी में इजाफा का बाएस बन जाती हैं। मोतवस्सित तबके में यह एक अहम सवाल है कि लड़की की तालीम में एखराजात किस हद तक बरदाश्त किये जायें। अगर ज्यादा काबिल भी बना दें तो फिर ससुराल ही का फायदा है।

५. जिन घरों में कुछ खुशहाली है वहां पर भी मैट्रिक इन्टर के बाद लड़कियों की तालीम पर ब्रेक लगना शुरू हो जाता है। अब फिक्र उनके हाथ लाल पीले करने की होती है। अगर कहीं पयाम तय नहीं हुआ है तो उनकी तालीम वेटिंग रूम में इन्तिजार करने की होती है। किसी वक्त दूल्हा आया और दूसरी ट्रेन से उन्हें लेता गया चाहे ग्रेजुएशन का इम्तिहान महीना दो महीना रह गया हो। यह सब बाद में देखा जायेगा, सच तो यह है कि फिर कभी नहीं देखा जायगा।

लड़कियों की तालीम क्यों ज़रूरी है— जहां तक लड़कियों की तालीम और ज़ेहानत का तअल्लुक है, यह देखा गया है कि फितरतन लड़कियां ज्यादा मेहनती और दिलचस्पी से पढ़ने वाली होती हैं, तालीम में लगन तारीफ के काबिल होती है। वह आपस में एक दूसरे से रश्क करती हैं, शायद इसीलिए मुकाबले की स्पिरिट बहुत काम कर जाती है। वह अक्सर लड़कों के मुकाबले में तालीम में बहुत आगे रहती हैं। हाल ही में लड़कियों की तालीम के सिलसिले में वाइसचान्सलर उस्मानिया यूनिवर्सिटी ने बताया कि यूनिवर्सिटी में बीस (२०) फीसदी तालिबात हैं लेकिन गोल्ड मेडल पाने वालों में अस्सी (८०) फीसद लड़कियां होती हैं। लड़कियों को जाहिल और अनपढ़ रखना ऐसा ही है जैसे कोई पुरबहार पेड़ सारी उम्र फूल और फल से महरूम (वंचित) रह गया हो। एक लड़की की तालीम से पूरा खानदान रौशन हो जाता है। वह जिस घर में जाएगी, इज़्ज़त पायेगी। हमारे तजुर्बे में यही बात आयी है कि जो लड़कियां बी०एड० में कामयाब हो गईं उनके जल्द जल्द विवाह हो गये। उनकी वजह से खानदान की आमदनी में इज़ाफ़ा होता हो या न होता हो इसका बड़ा फ़ायदा यह है कि वह नये माहौल में अपने आपको ढालने की सलाहियत अपने में पाती हैं। बहुत जल्द उस घर में बाइज़्ज़त मुकाम पैदा कर लेती हैं।

पढ़ी लिखी बहू सारे खानदान में एक जगमगाता चिराग़ है। सूरत शक्ल के साथ पढ़ी लिखी, तालीम याफ़्ता लड़कियों में बात करने का सलीक़ा, तहज़ीब और शाएस्तगी और खुदएतमादी (आत्मविश्वास) उनकी शख़्सियत को चार चांद लगाती है। जो लड़कियां पढ़ी–लिखी नहीं होतीं चाहे सुन्दर ही क्यों न हों अक्सर उन्हें शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है।

लड़कियों की तालीम का मसला अभी तक किसी संजीदगी के साथ मुल्क में तहरीक का मुकाम हासिल न कर सका। इस सिलसिले में हमारे ज़िम्मेदार लीडर, रहनुमा, दानिश्वर (बुद्धिजीवी) और दर्दमन्द हज़रात को खास तवज्जुह देने की ज़रूरत है। लड़कियों को कम से कम सात दर्जे तक तालीम दिलाना ज़रूरी समझा जाये तो मैट्रिक तक पढ़ा लें तो बहुत अच्छा है।

औरत की बड़ाई का राज़ इकबाल ने बड़ी खूबसूरती से पेश किया है :—

वजूदे ज़न से है तस्वीरे काएनात में रंग।
उसी के साज़ से है सोज़े दरूँ पैदा।।

जब औरत पढ़ी लिखी न हो तो तस्वीरे काएनात में रंग बेरंग रह सकता है, साज़ के तारों से ज़िन्दगी के वह सब रंग पैदा न हो सकेंगे जो एक अच्छी तालीमो तरबियत का समरा (फल) है। अकबर इलाहाबादी जो लड़कियों की तालीम के मुख़ालिफ़ होने के बावजूद इस बात के क़ायल हैं —

तालीम औरतों को भी देनी ज़रूर है।
लड़की जो बे पढ़ी हो वह बेशऊर है।।
ऐसी मुआशरत में सरासर फ़ुतूर है।
और उसमें वालदैन का बेशक कुसूर है।।
लड़की जब अपने बच्चों के जीवन का नूर है।
लड़की को इल्म देना फिर बेहद ज़रूर है।।

अनुवाद — हबीबुल्लाह आज़मी

●●●

समाज की एक बुराई बेजा तलाक़

आरिफ़ अ़ज़ीज़

इस्लामी शरीअ़त ने तलाक़ को एक हलाल चीज़ मगर अप्रिय अमल क़रार दिया है। इस के विपरीत निकाह को एक पसन्दीदः कर्तव्य बताया है। परन्तु आज मुस्लिम समाज में तलाक़ जैसा अप्रिय अमल कैसा बढ़ता जा रहा है इसका अनुमान लगाने के लिए यह ख़बर काफी है कि भारत के एक बड़े प्रांत बिहार के दारुलक़ज़ा (शरअी अदालत) में दर्ज मआ़मलातु की समीक्षा से पता चलता है कि वहां हर वर्ष दो हजार निकाह टूट जाते हैं क्योंकि पहले शादी के दौरान ग़ैर इस्लामी तरीक़ा इख़्तियार कर के दोनों पक्ष अनावश्यक खर्च का दिखावा करते हैं या तिलक और जहेज के नाम पर सौदे बाज़ी करते हैं जिसका प्रभाव बाद के जीवन पर पड़ता है फलस्वरूप बहुदा झगड़े टंटे शुरू हो जाते हैं और उसका अन्त पति पत्नी के अलगाव पर जाकर होता है। भोपाल के फेमिली कोर्ट के बारे में भी यह सूचनाएं मिल रही हैं कि यहां मुस्लिम पति–पत्नियों की भीड़ लगी रहती है जो तलाक़ के लिए अदालत का चक्कर लगाते रहते हैं।

हालांकि यह समाजी बुराई है फिर भी इस तरह की घटनाओं का हवाला देकर इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम किया जाता है। शिवसेना या संघ परिवार और इस प्रकार की दूसरी मुस्लिम दुश्मन संस्थाएं रात दिन मुसलमानों के पर्सनल लॉ क़ानून को औरतों के विरुद्ध बता कर उन को बदलने की बात करते रहते हैं और इस सिलसिले में तलाक़ और एक से अधिक शादियों का हवाला दिया जाता है और इसप्रकार इस्लाम और मुसलमान दोनों बदनाम हो रहे हैं, जिस से बचाव का एक ही तरीक़ा है कि मुसलमान अपनी शादी विवाह के उत्सवों में सादगी का प्रदर्शन करें, कोई कार्य ऐसा कदापि न होने दें जो इस्लामी शरीअत के ख़िलाफ़ हो ताकि बाद के जीवन में इस के हानिकारक प्रभाव से सुरक्षित रहें और जो भी इस प्रकार के मुकदमे हों वह फेमिली कोर्ट जाने के स्थान पर शरअ़ी अदालतों अर्थात अपने क्षेत्र के काज़ी के सामने पेश किये जाएं और वहां से जो फ़ैसला हो उसको सच्चे दिल से स्वीकार किया जाए। दूसरा तरीक़ा यह है कि मुसलमान हिन्दू भाइयों से सीधा सम्पर्क स्थापित करके उन्हें बताएं कि इस्लाम क्या है और हम उसके मानने वाले इस्लाम को किस प्रकार बरत रहे हैं। यदि हम अच्छे मुसलमान नहीं तो इस की ज़िम्मेदारी इस्लाम और उसकी शरीअत पर आइद नहीं होती बल्कि यह हमारा निजी अमल है जो दूसरों को हमारे बारे में गलत सोचने पर मज़बूर कर देता है। तीसरी राह यह है कि हम मुंह से कुछ न कहें बल्कि अमली तौर पर खुद को एक बेहतर इंसान बनाकर पेश करें और साबित कर दें कि हमारे शरअी कानून बहुत उत्तम हैं। मिसाल के तौर पर मुस्लिम पर्सनल लॉ के अन्तर्गत मुसलमान मर्दों के दो अधिकार के बारे में हिन्दू बहुसंख्यक वर्ग में काफ़ी भ्रम पाया जाता है। पहला अधिकार खड़े खड़े तीन तलाक देना और दूसरा अधिकार एक से अधिक बीवियां रखना। जबकि पहले अधिकार के बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) फ़रमाते हैं "अल्लाह की लानत उस पर जो बहुत अधिक लज़्ज़त चाहने वाला और बहुत अधिक तलाक़ देने वाला हो।"

नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरी जगह फ़रमाया है कि "हलाल चीज़ों में खुदाए तआ़ला की नज़र में तलाक़ सबसे अधिक अप्रिय है" क्योंकि इस तलाक़ के नतीजे में केवल पति पत्नी का अलगाव नहीं होता बल्कि कुटुम्ब का गठबन्धन बिखर जाता है। इसी प्रकार एक से अधिक बीवियां रखने के बारे में जो शर्तें (प्रतिबन्ध) इस्लाम ने मुसलमानों पर लगाई हैं साधारणतः उन का ध्यान नहीं रखा जाता अतः यह शादियां दुन्या के सामने मुस्लिम समाज की ग़लत तस्वीर पेश करती हैं। फिर क़ुर्आन और हदीस से विमुख होते हुए अपनी बीवियों के साथ दुर्व्यवहार, पक्षपात होगा या उनके तलाक देकर घर से बाहर निकाल दिया जाएगा तो ऐसी अन्याय पीड़ित महिलाएं अवश्य दूसरों के द्वार पर भटकेंगी और इंसाफ़ की भीख मांगेगी। इसके विपरीत मुसलमान खुद अपनी शरीअ़त पर चल कर बीवी के साथ अच्छे सलूक का प्रदर्शन करेंगे और उसका हक अदा करने में गफ़लत से काम न लेंगे तो

(शेष पृष्ठ २१ पर)

समाज सुधार

सामाजिक जीवन में ख़ुदा के ख़ौफ़ की कमी

मौलाना मुहम्मद राबे नदवी

सामाजिक जीवन को संवारने में तीन गुणों का बड़ा महत्व है। एक कर्तव्य प्रायणता (दियानत)। अगर इन तीनों बातों का ध्यान रखा जाये तो सामुदायिक जीवन परेशानी और मुसीबत की आमाजगाह बन जाता है जिसे ताक कर निशानः बनाया जाता है। इस्लाम मे इन तीनों बातों की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है और ताकीद की गयी है। और हुजूर सल्ल० और सहाबः किराम् मे यह तीनों बातें बेहतर ढंग से पायी जाती थीं और उनकी बुनियाद अल्लाह का ख़ौफ़ और आख़िरत में कामयाबी की तलब होती थी। इस लिए उनकी सोसाइटी मिसाली सोसाइटी थी। आपस की मुहब्बत, हमदर्दी और दियानतदारी उसके सामान्य गुण थे। अल्लाह का ख़ौफ़, आख़िरत की फ़िक्र जैसे कम होती गई मुसलमानों में इन गुणों की कमी होती गई और उनका सामुदायिक जीवन अबतर होता चला गया। ज़रूरत है कि इन गुणों के प्रचलन की फिक्र की जाये और सोसाइटी को संवारा और सुधारा जाये। नास्तिक (खुदा पर यक़ीन न रखने वाले) कौमों में अल्लाह का खौफ़ और आख़िरत की फ़िक्र नहीं होती है लेकिन यूरोप की वर्तमान सभ्य कौमों मे फ़ुर्ज़शनासी, हमदर्दी की, दियानत की ज़ाहिरी शक्लें ख़ास नज़र आती हैं। वास्तव में इसका कारण यह है कि उनके अधिकांश लोग शिक्षित होने के कारण अपने सामुदायिक जीवन को संवारने की फ़िक्र करते हैं, उनके पास खुदा का खौफ़ और आख़िरत की परिकल्पना नहीं है। उन्होंने खुदा के खौफ़ की जगह हुकूमत और कानून की पकड़ के खौफ़ को जगह दी है और आख़िरत की फ़िक्र की जगह अपने व्यक्तित्व और सामूहिक लाभ व हानि की फ़िक्र को जगह दी है। इस प्रकार से वह अपना सामुदायिक जीवन अपने मतलब की हद तक संभालने के काबिल हो गये। जरूरी काम के लिए फ़र्जशनासी इस लिए अख़्तियार की जाती है कि इससे बिना ज़िन्दगी की गाड़ी नहीं चल सकती है। वहां एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ सहयोग इस लिए कर रहा है कि अपनी ज़रूरत प्ड़ने पर उसको दूसरे के सहयोग की ज़रूरत पड़ती है, इस की प्राप्ति के लिए लेन देन के तरीकः से बचना कठिन है, वह दूसरे के साथ कोई हमदर्दी करता है तो या तो इस लिए कि उससे उसको अपना कोई काम निकालना होता है या हमदर्दी न करने पर सोसाइटी की नज़रों में उसको रुसवाई का खतरा होता है। जहां तक दियानत का सम्बन्ध है तो वह सिर्फ़ कानून की पकड़ से बचने के लिए यह आम लोगों की राय के दबाव और सोसाइटी की नुक्तः चीनी से बचने के लिए अख़्तियार करता है। अगर इन दोनों बातों में फ़रार की सूरत निकलती है तो वह बद दियानती से बिल्कुल नहीं बचता। अतएव पश्चिम की सोसाइटी में इस की बहुत सी मिसालें मिलती हैं कि जब भी बददियानती की पकड़ से महफूज मौका मिला तो खुलकर बददियानती की गई। न्यूयार्क में एक रात चन्द घंटों के लिए बिजली चली गई तो अंधेरे की आड़ में दुकानों के दरवाज़े तोड़ तोड़ कर हर तरह का सामान उठा ले गये और पुलिस ने पकड़ा तो बड़ा नागवार गुज़रा।

अमरीका में किसी अखबार ने यह सवालनामा प्रकाशित किया कि गर आपको पकड़ धकड़ का खतरा नहो और चोरी का मौका मिले तो क्या आप चोरी करेंगे? तो भारी अकसरियत का जवाब था ज़रूर करेंगे। यह उनकी साफगोई थी, क्योंकि पकड़ या दबाव का ख़तरा न होने की सूरत में बद दियानती न करना उन की निगाह में बेवकूफी से ज़ियादा नहीं।

वहां की हुकूमतें इन परिकल्पनाओं को जानती हैं इसीलिए वह इसके अनुसार व्यवस्था भी करती हैं और उसी के अनुसार नियम–क़ानून भी बनाती हैं और इस तरीक़े से सोसाइटी के ज़ाहिरी अमल को कन्ट्रोल कर लेती हैं जिस के कारण उनके सामूहिक जीवन का ज़ाहिरी रंग व रूप बहुत भला लगता है। छोटी मोटी और घटिया किस्म की बद दियानतियां पश्चिमी सभ्यता में बहुत कम होती हैं क्यों उनसे फायदा कम और सोसाइटी में बदनामी का नुकसान अधिक होता है। अतएव सड़क पर मामूली वस्तुओं की दूकानों पर कभी कभी माल बिना रक्षक के होता है और लोग क़ीमत रखते जाते हें और माल उठा लेते हैं,

जैसे समाचार पत्रों की बिक्री में यह तरीक: अपनाया जाता है कारण यह कि आस पास दसियों आदमी आते जाते देख रहे होते हैं। लेकिन जब भी किसी को कोई सुरक्षित मौक़ा मिल गया तो वह इस से पूरा फ़ायदा उठाता है पश्चिमी सभ्यता में क़ानून व हुकूमत की पकड़ के साथ पत्रकारिता की तरफ से भी पकड़ की व्यवस्था है और इस मामले में सहाफत बराबर काम अंजाम देती है। अगर किसी फर्म की तरफ से खराब माल बनाया जा रहा हो और मामला खराबी का हो तो पत्रकारिता फौरन उसकी पकड़ करती है और जनता के सामने इस विवाद को ले आती है। इस के कारण कारोबार में दियानत और एहतियात का ध्यान रखा जाता है। यह हालात हैं बे खुदा ज़िन्दगी के जिन में दीन की पकड़ न होने से दुनियावी तदबीरों से काम लिया जाता है, कम से कम देखने में अच्छे नतीजे हासिल कर लिये जाते हैं। लेकिन हमारे पूरब का माहौल संयोगवश दोनो कारकों से खाली हो चुका है न तो इसमें दीन का इतना असर है कि वह ग़लत कामों और खुदगर्ज़ियों से रोके, और कहीं कुछ असर पाया भी जाता है तो वह बहुत कम है, यह कम तादाद पूरी सोसाइटी को अच्छा नहीं बना पाती, और इस सच्चाई को मान कर इसका विकल्प दुनियावी तरीका अपनाने की तरफ भी ध्यान नहीं दिया जाता। नतीजा यह है कि हमारे सामूहिक जीवन में, सहयोग, हमदर्दी और दियानत तीनों बातो की मिसालें कम होती जा रही हैं, अलबत्ता इन की चर्चा बराबर होती है और इन के लिए दीन व आखिरत के हवाले भी दिये जाते हैं जिनका असर किसी हद तक होता है और बहुत से लोगों का इस प्रकार सुधार भी होता है, लेकिन प्रयास अधिक नहीं है। थोड़ी बहुत अच्छी मिसालों (दृष्टांत) के कारण और कहने–सुनने से कुछ काम होने की सूरत में यह समझा जाता है कि यह काफ़ी है और सोसाइटी इससे दुरुस्त हो जायेगी किन्तु यह काफी न होने के कारण समाज में काफ़ी खराबियां पैदा हो गई हैं।

अगर दुकानदार की अज्ञानता और किसी दूसरे की नज़र से बचने का मौक़ा मिल जाये तो ख़रीदार क़ीमत से ज़ियादा माल हासिल कर लेता है और अगर ग्राहक की नासमझी और गफलत का मौका दुकानदार को मिल जाये तो यह उससे अधिक दाम वसूल कर लेता है इसी तरह एक साथ रहने वाले एक दूसरे की चीज़ें मौका मिलने पर थोड़ा बहुत अपनी मिलकियत में ले लेते हैं, और एक दूसरे की चीज को बिना इजाज़त इस्तेमाल करने का रिवाज तो बहुत आम है भले ही इससे असल मालिक को कितनी भी कठिनाई और नुक़सान हो।

हमारे मुस्लिम समाज में भी यह कमज़ोरी बढ़ती जा रही है, इस का बड़ा कारण यह है कि हमारा धरेलू माहौल, फिर हमारी शिक्षा व्यवस्था दिलों को इन्सानी हमदर्दी का आदी और खुदा के खौफ और आखिरत की फ़िक्र से जोड़ने से बहुत गाफिल है, इल्म तो ढेरों मुहैया करने की फ़िक्र की जाती है, लेकिन किरदार को दुरुस्त करने और इन्सान बनाने के तरीक़े बहुत कम अपनाये जाते हैं। इसके नतीजः में वह नैतिक कमज़ोरियां दिलों में घर कर लेती हैं जिससे समाज और स्वार्थी बनता जाता है। दूसरे की चीज बिना इजाजत इस्तेमाल कर लेना, दूसरे की छिपी बातों की टोह में रहना, अपने मामूली फ़ायदे के लिए दूसरे का बड़ा नुकसान, दुनियावी फ़ायदे की खातिर आखिरत की बर्बादी मोल लेना, हमारे समाज मे फैलता जा रहा है।

एक संस्थान अपने टेलीफोन पर लम्बी दूरी की कालें छुपे तौर पर बार–बार हो जाने के बाद एक तख़्ती लगाई कि यह क़ौमी मक़सद का टेलीफोन है कृपया काल करें तो इसका चार्ज भी अदा करें। तख्ती की परवाह किये बिना एक साहब काल करने लगे जब उनसे कहा गया तो उन्होंने जवाबदिया कि मैं भी क़ौम का हूं और निःसंकोच काल की और मज़े की बात यह है कि ऐसी बातों को दीन के खिलाफ महसूस नहीं करते। यह एहसास कि मालिक से इजाज़त लेकर ही उसकी चीज़ इस्तेमाल की जाये और उसकी इजाजत पर ही उसकी चीज को अपनी मिलकियत में लिया जाये, चाहे वह चीज कितनी ही मामूली हो, बहुत कम लोगों को होता है। यह दियानत दारी की कमी का मामला है और जहां तक सहयोग और हमदर्दी का मामला है तो वह तो निष्ठा के साथ सिर्फ अल्लाह के लिए करने के दायरे से लगभग बाहर हो चुका है। अब तो जिसके सहयोग और हमदर्दी का गहरा जायजः लिया जाये तो इसके पीछे सामान्यतः कोई सांसारिक स्वार्थ छिपा होता है। यहां तक कि आपस में मिलने जुलने में, एक दूसरे से अखलाक के साथ पेश आने में, मुहब्बत, एहतराम के साथ पेश आने में, दूसरे की ज़रूरत व तलब खुशी से पूरा करने में अक्सर

सांसारिक स्वार्थ का छिपा हुआ अमल दखल मिलता है। इस प्रकार हमारा समाज सिर्फ एक बनावटी मेल जोल का समाज बन गया है। हम में निष्ठा की भावना से अल्लाह की रज़ा के लिए करने की भावना बहुत कम हो चुकी है।

वास्तव में खुदा का खौफ़ और आख़िरत की परिकल्पना के कमज़ोर पड़ जाने का ही यह असर है। जब ख़ुदा का ख़ौफ़ और आख़िरत (परलोक) की परिकल्पना होती है तो आसपास का मेल–जोल और सहयोग व हमदर्दी, निष्ठा, बेगर्ज़ी और सच्चे मेल–जोल की आदत और ताक़त पैदा होती है जिससे इन्सानियत और सच्चे अख़लाक़ का माहौल बनता है और ज़िन्दगी में ज़िन्दगी का मजा आता है। रसूल सल्ल० के और चारों ख़लीफ़ा के ज़माने में खुदा के ख़ौफ़ और आख़िरत की फ़िक्र को बहुत सी घटनायें हैं, उसके बाद के ज़मानों में धीरे धीरे उसमें कमी हुई लेकिन इस्लाम का कोई जमाना उन जैसी घटनाओं से खाली नहीं रहा यहां तक कि वर्तमान युग में भी इस भावना से युक्त घटनायें मिलती हैं। सहयोग व हमदर्दी की निःस्वार्थ घटनायें तो समय समय पर देखने को मिलती रहती हैं। मिसाल के तौर पर मक्का की यह ताजा घटना कि एक पाकिस्तानी नौजवान जो मक्का में काम करते हैं, दोनों गुर्दों के बेकार हो जाने के मर्ज से पीड़ित हुए। उनको डाक्टरों ने बताया कि वह किसी का गुर्दा अपने शरीर में लगवायें तब ही बच सकते हैं, ख़र्च लम्बा था, उनके कुछ दोस्त इसके लिए फ़िक्रमन्द हुए, इसी दौरान एक अरब आये उन्होंने पूछा कितना खर्च आयेगा। उनको बताया गया कि एक लाख रियाल का ख़र्च है, उन्होंने उसी समय रक़म निकाल कर दे दी। जब उनसे उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने कहा कि जिसके लिए मैंने किया है यानी खुदा मेरा नाम जानता है और यह कहकर चले गये। क्या यह बात अल्लाह की रज़ा और आख़िरत में उसके बदले के अलावा किसी और कारण से हो सकती है?

और जब खुदा के खौफ और आख़िरत की परिकल्पना से ज़िन्दगी खाली हो तो बेदर्दी और खुदगर्ज़ी की घटनायें अक़सर देखने में आती हैं जो मुल्क के क़ानून से काबू में नहीं आतीं जैसे रेल या हवाई दुर्घटना के समय मरने वालों और घायलों के माल पर फौरन कब्जा करना, जैसा कि रूस जैसे सख्त पकड़ रखने वाले मुल्क में आरमीनिया में आये भूचाल से प्रभावित लोगों के साथ बेदर्दी की खबरें आईं, जो इस बात की अलामत है कि कानून से एक बनावटी रोक तो लग सकती है लेकिन सच्ची और भरपूर रोक नहीं हो सकती।

रिज़वान लखनऊ मई २००१ से साभार

प्रस्तुति : मो० हसन अंसारी

इस्तिख़ारे की नमाज़

इदारा

जब किसी जाइज़ काम में हिचकिचाहट हो, या दो कामों में एक इख़्तियार करने में फैसला न हो पा रहा हो तो सुन्नत यह है कि इस्तिख़ारा करे यानी दो रकअ़त नमाज़ पढ़कर अल्लाह से ख़ैर की दुआ़ मांगे। फिर काम शुरू करे। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वस्सलम ने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ने के बा़द यह दुआ़ पढ़ने की ता़लीम दी है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُکَ بِعِلْمِکَ، وَاَسْتَقْدِرُکَ بِقُدْرَتِکَ وَاَسْاَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ الْعَظِیْمِ، فَاِنَّکَ تَقْدِرُ وَلاَ اَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلاَ اَعْلَمُ، وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ، اَللّٰهُمَّ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَ عَاقِبَةِ اَمْرِیْ، فَاقْدِرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِکْ لِیْ فِیْهِ، وَاِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِیْ فِیْ دِیْنِیْ وَ مَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ، فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ، وَاقْدِرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ کَانَ ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ.

अर्थ : ऐ अल्लाह मैं आप के अ़िल्म के ज़रीअ़े आपसे भलाई मांगता हूं और आप की क़ुदरत के साथ क़ुदरत मांगता हूं, और आप के अ़ज़ीम फ़ज़्ल की भीक मांगता हूं, आप क़ुदरत रखते हैं और मैं कुछ भी क़ुदरत नहीं रखता, आप सब कुछ जानते हैं मैं कुछ नहीं जानता आप तो ग़ैब की बातों को ख़ूब जानते हैं, ऐ अल्लाह अगर यह काम मेरे दीन, मेरी दुन्या और मेरी आख़िरत के लिए भला है तो मुझे इस के करने की ताक़त दे और मेरे लिए इस को आसान कर दे, फिर इस में मुझे बरकत दे और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे दीन के लिए मेरी दुन्या के लिए और मेरी आख़िरत के लिए बुरा है तो इस को मुझ से फेर दे और मुझ को इससे फेर दे, और जिस काम में मेरे लिए भलाई हो वह जहां भी हो मुझे उस काम के करने की ताक़त दे फिर मुझे उस से राज़ी कर दे (जहां 'اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ' – यह काम– आया है वहां उस काम को ध्यान में लायें)

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : *मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या इन्सान अपने जिस्म का कोई हिस्सा इस तरह ख़ैरात कर सकता है कि वह लिख कर वसीयत कर दे कि मेरे मरने के बाद मेरे गुर्दे या आंख किसी ज़रूरत मन्द को दे दिये जाए। (मोतमिन खां, लखनऊ)*

उत्तर : कोई इन्सान अपने अअ़ज़ा (अंगों) का मालिक नहीं है, किसी ज़रूरत मन्द को देने की वसीयत करने का उसको हक़ (अधिकार) नहीं है।

प्रश्न : *क्या औरत जनाज़े की नमाज़ में शरीक हो सकती है?*

उत्तर : नमाज़े जनाज़ा चूंकि बाहर होती है, और औरतें अपने घरों में ही नमाज़ अदा करती हैं इस लिए वह घर से बाहर निकल कर जनाज़े की नमाज़ में शरीक न होंगी।

प्रश्न : *क्या शकर का मरीज़ रमज़ान के रोज़े छोड़कर फ़िद्‌या दे सकता है?*

उत्तर : मरीज़ के लिए फ़िद्‌या नहीं है जब भी सिहत हो क़ज़ा करेगा। अगर फ़िद्‌या अदा करे तो कबूल होने की अल्लाह से उम्मीद की जा सकती है।

प्रश्न : *पुरानी मस्जिद नये मैट्रियल से बनाई गई क्या उसकी पुरानी ईंटों से दीनी मदरसे की इमारत बनाई जा सकती है? (मु० अय्यूब माती)*

उत्तर : अगर उन ईटों की मस्जिद में ज़रूरत नहीं है तो उनको ख़रीद कर मदरसे की इमारत में लगा सकते हैं।

प्रश्न : *एक आदमी हर बात में क़सम खाता है उसका क़सम खाना कैसा है?*

उत्तर : बिना ज़रूरत किसी–बात में क़सम खाना बुरी बात है सच्ची बात पर भी क़सम न खाना चाहिए मगर जिसने अल्लाह की क़सम खाई और यूं कहा अल्लाह की क़सम ख़ुदा की क़सम तो वह कसम हो गयी अब उसके खिलाफ़ कहना दुरुस्त नहीं और अगर अल्लाह का नाम नहीं लिया केवल इतना कह दिया कि मैं क़सम खाता हूं कि मैं फलां काम न करूंगा तब भी क़सम हो गयी।

प्रश्न : *अगर किसी ने कुर्आन मजीद हाथ में लेकर कोई बात कही लेकिन क़सम नहीं खाई तो क़सम होगी या नहीं?*

उत्तर : कुर्आन मजीद को हाथ में लेने या छूने या मस्जिद की तरफ हाथ उठाने से क़सम नहीं होती जब तक कि क़सम का शब्द न कहे।

प्रश्न : *अगर किसी ने कअ़बः की कसम, आंखों की क़सम, बेटों की कसम, अपनी जवानी की क़सम, अपनी मां की क़सम या किसी के जान की कसम खाई तो क्या क़सम होगी ?*

उत्तर : अल्लाह के सिवा किसी और की क़सम खाने से क़सम नहीं होती ऊपर जितने क़िस्म की क़समें बताई गई हैं उनमें से किसी के खाने से क़सम नहीं होती, इस तरह की क़सम खाकर उसके खिलाफ़ करने से कफ़्फ़ारा न देना पड़ेगा।

प्रश्न : *किसी दूसरे ने क़सम दिलाई कि तुम्हें ख़ुदा की क़सम, तुम यह काम ज़रूर करो तो ऐसी क़सम का क्या हुक्म है ?*

उत्तर : किसी दूसरे की क़सम दिलाने से क़सम नहीं होती उसके खिलाफ़ करना दुरुस्त है।

प्रश्न : *क़सम खाकर किसी ने इन्शा अल्लाह का शब्द कह दिया तो क्या यह क़सम हो गयी?*

उत्तर : क़सम खाकर अगर किसी ने इंशाअल्लाह का शब्द कह दिया कि फलां काम इंशाअल्लाह न करूंगा तो क़सम न होगी।

प्रश्न : *अगर ऐसी बात पर क़सम खाई जो अभी नहीं हुई बल्कि आइन्दा होगी जैसे ख़ुदा की क़सम आज पानी बरसेगा, ख़ुदा की क़सम आज मेरा भाई आयेगा फिर वह नहीं आया और पानी नहीं बरसा तो क्या कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा?*

उत्तर : ऊपर की बयान की हुई सूरत के अनुसार कफ़्फ़ारा देना होगा।

प्रश्न : *किसी ने गुनाह करने की क़सम खाई थी कि फलाने की चीज़ चोरी करूंगा या ख़ुदा की क़सम अपने मां बाप से कभी नहीं बोलूंगा, ऐसी क़सम का क्या हुक्म है ?*

उत्तर : ऐसी क़सम का तोड़ना वाजिब है और क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा देदे नहीं तो गुनाह होगा।

प्रश्न : *अगर किसी ने क़सम तोड़*

डाली तो उसका कफ़्फ़ारा क्या है ?

उत्तर : अगर किसी ने क़सम तोड़ डाली तो उसका कफ्फ़ारा यह है कि दस मुहताजों को दो वक़्त खाना खिला दे या कच्चा अनाज दे दे या पौने दो सेर गेहूं दे दे बल्कि दो सेर दे दे और बाक़ी तरीक़ा वही है, जो रोज़े के कफ्फ़ारे में है या कपड़ा दे जिससे बदन का हिस्सा ढक जाए जैसे चादर या बड़ा लम्बा कुर्ता दे दिया तो कफ्फ़ारा अदा हो जाएगा, लेकिन वह कपड़ा बहुत पुराना न होना चाहिए और अगर हर फ़क़ीर को एक लुंगी या केवल एक पायजामा दे दिया तो कफ्फ़ारा न अदा होगा अगर लुंगी के साथ कुर्ता भी हो तो अदा हो गया, और इन दोनों में इख़्तियार है कि चाहे कपड़ा दे चाहे खाना खिलाए हर तरह कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा और यह हुक्म जो बयान हुआ तब है जब कि मर्द को कपड़ा दे और अगर किसी ग़रीब औ़रत को कपड़ा दिया तो इतना बड़ा कपड़ा होना चाहिए कि सारा बदन ढक जाए और उससे नमाज़ पढ़ सके उससे कम होगा तो कफ़्फ़ारा अदा न होगा।

प्रश्न : *किसी ने कई बार क़सम खाई जैसे एक बार कहा अल्लाह की क़सम फुलाना काम न करूंगा, फिर क़सम ख़ाई कि ख़ुदा की क़सम फुलां काम न करूंगा फिर क़सम खाई, तो क्या अलग–अलग कफ्फ़ारा देना होगा?*

उत्तर : इन सूरतों में केवल एक ही कफ़्फ़ारा देना होगा।

प्रश्न : *हड़ताल की वजह से स्कूल बन्द हो जाते हैं मैं एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाता हूं स्कूल बन्द हो जाने के बाद तन्ख्वाह पूरी मिल जाती है तो क्या यह पैसा लेना जायज़ है ?*

उत्तर : इसमें कोताही आपकी ओर से नहीं है इस लिए आपकी तन्ख्वाह हलाल है।

प्रश्न : *हमारे दोस्त की एक गाड़ी है जो बच्चों को रोज़ ले आती ले जाती है हर महीना किराया लेते हैं अब स्कूल में दो माह की छुट्टियां हो रही हैं इन दो माह का किराया लेना जायज़ है या नहीं?*

उत्तर : अगर स्कूल वाले खुशी से छुट्टी के ज़माने का किराया भी दें तो जायज़ है।

प्रश्न : *मेरे पति नौकर पेशा हैं मेडिकल कालेज में जिनको विभाग की ओर से सुहूलतें हैं और जो दवाएं हमें मिलती हैं वह पैकिंग की हुई होती हैं कुछ तो वक्ती तौर पर यानी बीमारी के दौरान खाई जाती हैं बाक़ी बच जाती हैं जो हमारे पास इकट्ठा हो जाती हैं उनको हम क्या करें क्या कैमिस्ट को दे दें। कैमिस्ट को देकर कोई दूसरी चीज़ टूथ पाउडर वगैरा ले सकते हैं, क्या यह शरीअ़त में जायज़ है क्योंकि मैं सोम सलात की बहुत पाबन्द हूं मश्कूर हूंगी ?*

उत्तर : विभाग की ओर से जो दवाएं मिलती हैं उनका आप इस्तेमाल कर सकती हैं मगर उनके बेचने या बदलने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं है जो बची हुई दवाएं हों उनको विभाग को वापस कर दिया कीजिए, और अगर उनकी वापसी मुम्किन न हो तो जरूरतमन्द मुहताजों को दे दिया करिये या किसी खैराती शिफ़ा खाने में भिजवा दिया करिये।

खूब पढ़ा करें

सुब्हानल्लाहि वलहम्दुलिल्लाहि वल्लाहु अकबर

(पृष्ठ ३५ का शेष)

मौलिक कामों को निश्चित कीजिए, बेकार कामों में पड़कर समय न बरबाद कीजिए, हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० ने फ़रमाया "अल्लाह तआ़ला रात का अमल दिन में कुबूल नहीं करता और न दिन का अमल रात में कुबूल करता है। और अल्लाह जल्ल शानुहू नफ़िल को तब तक कुबूल नहीं करता जब तक फर्ज न अदा किया जाए।"

१६. अच्छा अनुमान (विचार) रखिये, और अपने को बेहतर से बेहतर हालत में बदलने का पक्का इरादा रखिये, अल्लाह का फ़रमान है –

अनुवाद – और तुम हिम्मत न हारो और रंज मत करो और ग़ालिब (विजयी) तुम ही रहोगे अगर तुम पूरे मोमिन हो। (आलि इमरान–१३६)

१७. अपने अन्दर सब्र (धैर्य) मुजाहिदह (परिश्रम) सवाब की नियत और अल्लाह के लिए जांफ़िशानी की विशेषता पैदा कीजिए और हर मौके पर अपने उत्साह और कार्यक्षमता का नवीनकरण कीजिए।

अल्लाह तआला का इरशाद है–

"ऐ ईमान वालो! (अल्लाह की राह में आई तकलीफों के मुकाबले में) सब्र से काम लो और सब्र में औरों से बढ़े चढ़े रहो और काफ़िरों के मुकाबले पर मुस्तइद रहो व जमे रहो, और अल्लाह से डरते रहो शायद तुम मुराद पर पहुंच जाओ। (आले इमरान – २००)

बांगे हिरा के शुकिये के साथ ।

रूपान्तर : गुफ़रान नदवी

कलम-ए-शहादत का अनुवाद

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अ़लावा और कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

शयातीन जिन्न समुन्दर से मोती निकालते थे

अबू मर्ग़ूब

क़ुर्आने करीम में सूर–ए–अंबिया २१ की आयत ८१,८२ का तर्जुमा पढ़िये।

और हम ने तुन्द व तेज़ हवा को सुलैमान के वश में कर दिया था। वह उनके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ चलती थी जिसमें हम ने बरकत रखी है। (अर्थात शाम देश) और हम हर चीज़ को जानते हैं। और (हज़रत सुलैमान अ़० के वश में दिये गये) शैतानों में से कुछ ऐसे शैतान हैं जो (सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लिये मोती निकालने के लिए समुन्दरों में) ग़ोते लगाते थे और वह जिन्न दूसरे काम भी करते थे और उन सब के निगहबान हम ही थे।

सूर–ए–स्वाद आयत ३६ में बताया गया कि हवा सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को जहां वह जाना चाहते नर्मी से ले जाती। यहां बताया गया कि तेज़ चलकर, आन्धी बन कर शाम की तरफ़ ले जाती, हवा सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की ताबिअ़ (अधीन) थी जैसी ज़रूरत होती वैसे चलती। आयत में है "और हम हर चीज़ को जानते हैं इशारा है कि सुलैमान (अ़०) को जो क़िस्म क़िस्म के इनआ़मात हम ने दिये हैं उनके मसालेह़ (छुपे लाभ) से हम वाक़िफ़ हैं।

आयत में हैं कि उन जिन्नों के हम ही निगहबान थे। मुराद है अपनी पैदाइश के लिहाज़ से बे शक वह बहुत ही कवी और सरकश (बली तथा उद्दण्ड) हैं। लेकिन हमने जो उन को सुलैमान (अ़०) के क़बज़े में दिया है तो हम ही उन को संभालने वाले हैं और हमने सुलैमान (अ़०) को यह भी बता दिया कि किस तरह उन को ज़ंजीरों में बांध कर क़ैद में रखें।

आयत में जो ग़ोते (डुब्की) लगाने के सिवा दूसरे कामों का ज़िक्र है उसकी तफ़सील दूसरी आयत में है जिस का बयान किसी मौक़े से आइन्दा आए गा।

जब अल्लाह तआ़ला ही उन जिन्नों के निगहबान संरक्षक थे और अल्लाह तआ़ला ही ने उन को सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लिए मुसख़्ख़र किया तो इससे ज़ाहिर हो जाता है कि यह जो ख़र्क़ आ़दत (प्रकृति विरूद्ध) बातें हो रही थीं यह सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हो रहा था। यह जिन्नों की आ़म आ़दत (प्रकृति) न थी।

हज़रत सुलैमान (अ़०) की फ़ौज में जिन्न भी थे और चिड़ियां भी

सूर–ए–नम्ल २७ आयत १७ का अनुवाद पढ़िये –

और सुलैमान के लिय जो लशकर (सेना) जमा किया गया था उस में जिन्न भी थे, इन्सान भी थे और चिड़ियां भी थीं। और वह सब (चलने में नज़्म बाकी रखने के लिए) रोके जाते थे।

क़ुर्आन शरीफ़ में या सहीह़ ह़दीसों में ह़ज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की किसी बादशाह से किसी लड़ाई का ज़िक्र नहीं मिलता इस लिये जिन्न और परिन्दों के बारे में यह न मा़लूम हो सका कि दुशमन के मुक़ाबले में उन का क्या काम था। अल्बत्ता हुद हुद का एक कारनामा मिलता है जिसने बिल्क़ीस की हुकूमत की तफ़सीलात बताई थीं। फिर ह़ज़रत सुलैमान अ़लैहिस्लाम का पैग़ाम बिल्क़ीस को पहुंचाया था।

जिस का क़िस्सा यूं है कि एक बार सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को मा़लूम हुआ कि हुद हुद फ़ौज से ग़ाइब है। वह नाराज़ हुए और फ़रमाया, हुद हुद को मैं नहीं देख रहा हूं। क्या वह कहीं ग़ाइब हो गया है? अगर वह इस ग़ाइब होने की वजह की कोई खुली हुई दलील नहीं बयान करता है तो मैं उस को सख़्त सजा दूंगा या फिर उसे ज़ब्ह कर डालूंगा। इतने में हुद हुद आ गया और सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से कहने लगा कि मैं एक ऐसी ख़बर लाया हूं जो आप के इ़ल्म में नहीं है। मैं सबा क़बीले की एक सच्ची ख़बर लाया हूं मैंने वहां एक औ़रत को देखा वह वहां हुकूमत कर रही है, उसको हर क़िस्म का सामान ह़ासिल है। उस के लिए एक अ़ज़ीम तख़्त है। मैंने देखा वह और उसकी क़ौम अल्लाह को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उनके इस बुरे अ़मल को उन की निगाह में अच्छा कर के दिखा दिया है और उनकी राह में रूकावट डाल दी है। सो वह ह़क़ के रास्ते पर नहीं चलते कि उस अल्लाह को सजदा करें

जो ज़मीन व आसमानों की छुपी चीज़ों को निकालता है और वह उसको भी जानता है जिसको तुम छुपाते हो और उसे भी जानता है जिसे तुम ज़ाहिर करते हो। पर अल्लाह ही ऐसा है जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं और वह अर्शे अज़ीम का मालिक है।

हुद हुद के इस बयान पर सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने एक ख़त लिखा जिस में था।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम – तुम लोग मेरे मुक़ाबले में घमण्ड मत करो और मुतीअ़ अधीन हो कर हाज़िर हो यह ख़त लिख कर हुद हुद से फ़रमायाः हम अभी देखे लेते हैं कि तमु सच कहते हो या झूठ लो यह ख़त ले जाओ और उसके पास गिरा कर ज़रा दूर हट कर देखो वह लोग क्या करते हैं। हुद हुद ने ऐसा ही किया। बिल्क़ीस ने ख़त देख कर अपने दरबारियों और हाकिमों को बुलाया और ख़त सुनाकर मशवरा चाहा। सब ने कहा हम लोग ताक़तवर हैं आप जो मुनासिब समझें फ़ैसला दें यानी वह सब मुक़ाबले के लिए तैयार थे लेकिन बिल्क़ीस ने समझाया कि बादशाह लोगों की आदत होती है कि वह जिस मुल्क पर हम्ला करते हैं उसे तबाह कर देते हैं और वहां के शरीफ़ सज्जन लोगों को ज़लील कर देते हैं ऐसा ही यह लोग भी करेंगे लिहाज़ा इस से बचने के लिए मैं तदबीर करती हूं। मैं बादशाह को हदये तुहफ़े (उपहार) भेजकर देखती हूं कि क्या जवाब आता है। चुनांचि कुछ लोग क़ीमती हदया लेकर गये और जब सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को पेश किया तो उन्होंने फ़रमाया तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो। तुम अपने माल पर इतरा रहे हो अल्लाह तआ़ला ने तो मुझे इससे अच्छा माल दे रखा है। तुम यह माल लेकर अपनी रानी के पास वापस जाओ और उसे बता दो कि हम ऐसी फ़ौज भेजेंगे जिसका उस के फ़ौजी मुकाबला नहीं कर सकते फिर उनको ज़लील कर के वहां से निकाल देंगे। उस वफ़्द की वापसी के बाद सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को इल्म हो गया कि बिल्क़ीस मुतीअ़ होकर आ रही है। चुनांचि आप ने अपने दरबारियों को बुलाकर पूछा कि तुम में से कौन बिलक़ीस के हाज़िर होने से पहले उस का तख़्त हाज़िर कर सकता है एक इफ़रीत जिन्न ने कहा मैं उसे आप के इस जगह से हटने से पहले ही हाज़िर कर सकता हूं मैं इस काम की ताक़त रखता हूं और मैं अमानतदार भी हूं। फिर जिस को किताब का इल्म था उसने कहा मैं तो उसे पलक झपकते में ला सकता हूं। पस जब सुलैमान (अ़लै०) ने तख़्त सामने रखा देख फ़रमाया यह तो मेरे रब का फ़ज़्ल हैं ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र गुज़ार हूं या ना शुक्रा। जो शुक्र करता है अपने नफ़े के लिऐ करता है और जो नाशुक्री करता है मेरे रब को उसके बुरे अंजाम की कोई परवाह नहीं।

बिल्क़ीस की आज़माइश के लिए हज़रत सुलैमान (अ़०) ने तख़्त की शक्ल थोड़ी बदलवा दी और जब वह आई तो उससे पूछा गया कि क्या इसी तरह तेरा तख़्त है? उसने कहा यह तो जैसे वही है और हमको तो पहले ही से इल्म है कि आप अल्लाह के नबी हैं और हम पहले ही से आप की इताअ़त का फ़ैसला कर चुके हैं। लेकिन वह काफ़िर क़ौम से थी इस लिये ग़ैरुल्लाह की इबात में मुबतला रही इस अ़मल ने उसको ईमान से रोक रखा था। अगर्चि मुतीअ़ हो चुकी थी।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने उसको अपनी शाने नुबूवत एक तरह और दिखाई, एक शीश महल बनवाया उसका रास्ता नहर पर से गुजारा जिस पर शीशा लगा दिया, मलिका को उसी रास्ते से चलने को कहा गया, उसने पानी से बचाने के लिए पाइंचे उठाये उस वक़्त सुलैमान (अ़०) ने फ़रमाया यह तो पानी पर शीशा है। अब बिल्क़ीस बोल पड़ी ऐ मेरे रब मैंने शिर्क कर के अपने पर ज़ुल्म किया अब मैं सुलैमान (अ़०) के साथ इन की रहनुमाई में रब्बुल आ़लमीन पर ईमान लाई।

जब आप फ़र्ज़ नमाज़ का सलाम फेर चुकें तो पहले तीन बार, अस्तग़्फ़िरुल्लाह अस्तग़्फ़िरुल्लाह, अस्तग़्फ़िरुल्लाह कहें, फिर कहें – अल्लाहु अकबर, फिर कहें – अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्त या ज़ल्जलालि वलइक्राम।

फिर ३३ बार सुब्हानल्लाहि पढ़ें फिर ३३ बार अल्हम्दुलिल्लाहि पढ़ें, फिर ३४ बार अल्लाहु अकबर पढ़ें फिर दुआ मांगें, और भी अज़्कार पढ़ना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित हैं।

●●●

नबवी इलाज

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दवाएं और इलाज

ख़त्मुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया वालों के लिए एक नुसख़–ए–शिफ़ा (रोगों से मुक्ति कराने वाली किताब) लेकर आए, आपका यह अन्तिम सहीफ–ए–खुदावन्दी (पवित्र–कुर्आन) पूरब पच्छिम, उत्तर दक्खिन बसने वाली हर क़ौम के लिए समान रूप से रोगों से छुटकारा देने वाला साबित (सिद्ध) हुआ, जब भी और जिस क़ौम ने भी इस हयात आफ़िरीं नुसखे (जीवन प्रदान करने वाली किताब) अर्थात पवित्र कुर्आन को अपने खूंट में बांध लिया या उससे नई ज़िन्दगी हासिल की।

मनुष्य के जीवन काल का कोई ऐसा भाग नहीं जिसके लिये नबी करीम सल्ल० की शिक्षा और दावत न हो, फिर यह कैसे मुम्किन था कि दुखी दुनिया के शारीरिक रोगों की ओर आप ध्यान न देते, चुनांचि हज़रत ख़त्मी मरतबत सल्ल० ने रूहानी रोगों के साथ शारीरिक रोगों के इलाज किये।

हुज़ूर सल्ल० तबीब़ (चिकित्सक) न थे, न मुआलिजात (दवा इलाज) कभी मनसबे नबूवत का आवश्यक अंश हुआ है लेकिन अल्लाह के कामिल व मुकम्मल नबी ने अतिब्बा (चिकित्सकों) के लिए उज्जवल पग चिन्ह छोड़े हैं उनकी झलक अगले पृष्टि पर आप देखिये –

दवा के साथ दुआ – वर्तमान काल में माद्दियत (भौतिकता) कुछ इस दर्जे ज़हनों पर छाती जा रही है कि कुछ लोग अल्ला वालों के दम दुरूद और वज़ीफ़ा, दुआ की इफ़ादियत (लाभदायिकता) को बिल्कुल गैर ज़रूरी और ग़ैर मुफ़ीद समझने लगे हैं। उनके नजदीक सब कुछ दवा ही दवा है जब कि दवा शिफ़ा (स्वास्थ्य) का साधन है, शिफ़ा बख़्श नहीं , शिफ़ा तो अल्लाह तआला के हाथ में है, अगर दवा में शिफ़ा होती तो कभी कोई बीमार दवा के इस्तेमाल के बाद शिफ़ा पाए बगैर न रहता यह बात हमें हरगिज़ नहीं भूलनी चाहिए कि शिफ़ा अल्लाह के हाथ में है, लिहाज़ा शिफ़ा के लिये उसके हुजूर ही रूजुअ (झुकाव) करना चाहिए और दवा को महज़ एक ज़रिया अलबत्ता प्रभावित एवं लाभदायक साधन समझना चाहिए, इस सिलसिले में हुजूर रसूल करीम स०अ० का उस्वह (नमूना) मुलाहिज़ा हो।

एक दफ़आ हुज़ूर सल्ल० की अज़वाजे मुतह्हरात (बीवियों) में से किसी एक की उंगली में फुन्सी निकली हुई थी, उन का बयान है कि हुज़ूर सल्ल० ने इनसे फ़रमाया, क्या तुम्हारे पास "जरीरह" है? मैंने अर्ज़ किया "जी है" आपने फ़रमाया, 'ज़रीरह' उस पर लगाओ और यह पढ़ो —

इस सिलसिले में एक वाकिआ खुद हुजूर सल्ल० के बारे में हज़रत अली रजि० से मनकूल है, एक रात हुजूर सल्ल० नमाज़ अदा कर रहे थे, रात का वक़्त था, आपने ज़मीन पर दस्ते मुबारक (हाथ) रखा तो एक बिच्छू ने काट खाया, हुजूर सल्ल० ने नमक मंगा कर पानी में डाला, फिर यह नमक वाला पानी बिच्छू के काटे हुए मुक़ाम पर डालना शुरू किया, आप पानी डालते जाते थे और अपना दूसरा हाथ उस पर फ़ेर कर "मुअव्वज़ तैन" (आख़िरी दो सूरतें) पढ़ते जाते थे। (मिशकात, तिरमिज़ी, बैहक़ी) गोया दवा के साथ–साथ दुआ जारी रखी।

कुरआन मजीद एक नुसख–ए–शिफ़ा

इरशाद रब्बानी है –

अनुवाद – "और हमने कुरआन नाज़िल (उतारा) किया है जो शिफ़ा है और ईमानवालों के लिये रहमत है" (१७:८२)

कलाम पाक (कुरआन शरीफ) शिफ़ा है इसमें रूहानी रोगो के लिए भी शिफ़ा है और शारीरिक रोगों के लिए भी, अख़लाकी (नैतिक) ख़राबियों के लिये भी और मुआशरती (सामाजिक) त्रुटियों के लिये भी– जिन भाग्यशालियों ने कलामुल्लाह (कुरआन शरीफ़) के सीधे रास्ते को अपनाया, वह बीमारियों से पाक और चिकित्सकों से बेपरवाह होगए, इस दावे के सुबूत में तारीख़ के दफ़तर के दफ़तर मौजूद हैं, यहां हम हुजूर सल्ल० के मुबारक ज़माने की एक मिसाल पेश करते हैं –

ख़ैरूल कुरून अर्थात नबी करीम सल्ल० के ज़माने में, मदीने मुनव्वरा के तबीब (चिकित्सक) हाथ पर हाथ धरे

बैठे रहते, यहां तक कि वह रहमते आलम सल्ल० के हुज़ूर, इस बात की शिकायत लेकर आए कि कोई बीमार उनकी तरफ़ आता नहीं, हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "यह लोग उस वक़्त तक खाने की तरफ हाथ नहीं बढ़ाते जब तक भूक शिद्दत से न लगे, और इससे पहले कि शिकम सैर हो (पेट भर खाना खाना) खाने से हाथ रोक लेते हैं गोया उनकी सेहतमन्दी का राज़ उनके कम खाने में है। कुरआन मजीद आज भी नुसख–ए–शिफ़ा है, नुस्ख़े का इस्तेमाल शर्त है, केवल एक नुसख़े का अच्छा समझना अथवा उसे पढ़ते रहना प्रयाप्त नहीं है, जब तक उस नुसखे हयात आफ़री (जीवन दायक पुस्तक) के सिद्धान्त को अपने जीवन पर लागू न करेंगे उससे लाभ कैसे प्राप्त करेंगे।

मेंहदी के फाइदे – मेंहदी हमारे देश में इस्तेमाल होने वाली आम चीज़ है, लेकिन इसकी विशेषताओं का परिचय पूरे तौर पर जनसाधारण को क्या, पढ़े लिखे लोगों को भी नहीं, आम तौर पर मेंहदी की पत्तियां पीस कर हाथ पैरों पर सुन्दरता के लिये या गर्मी कम करने के लिए लगाते हैं, ब्याह शादी, ईद, बक़रईद आदि त्योहारों के अवसर पर मेंहदी का इस्तेमाल बहुत ज़ियादह किया जाता है। तबीबों (हकीमों) के रिसर्च के अनुकूल मेंहदी खून साफ़ करने वाली है, चर्म रोगो के लिए लाभदायक है, जुज़ाम (कोढ़) आतश्क (सूज़ाक) और यरक़ान (पीलिया) के लिये मेंहदी का प्रयोग लाभदायक है, इसका लेप, वरम, आब्ला और आग से खाल के जल जाने का बेहतरीन इलाज है, इसकी विशेषता ठण्डी है। (किताबुलमुफ़रदात, खवासुल अदवियह पृ–३५२)

हुज़ूर रसूल करीम सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने निम्नलिखित अवसरों पर मेंहदी की पत्ती दवा के तौर पर इस्तेमाल की है – फोड़े फुन्सी पर, कांटा वगैरह चुभ जाने पर, दर्द सर के लिए हुज़ूर सल्ल० की ख़ादिमा (सेविका) हज़रत सलमा उम्मे राफिए रज़ि० फ़रमाते हैं – जब भी रसूले खुदा सल्ल० के फुन्सी निकलती थी कांटा वगैरह चुभ जाता तो हुज़ूर सल्ल० मुझ से इरशाद फ़रमाते कि इस पर मेंहदी लगाओ, (मिश्कात, तिर्मिज़ी)

एक दूसरी हदीस अल्लामा इब्न क़य्यिम ने "इब्न माजह" के हवाले से यूं नक़ल की है :–

जब भी हुज़ूर सल्ल० को दर्द सर होता तो आप स०अ० उस पर मेंहदी लगाते और फ़रमाया करते कि अल्लाह के हुक्म से यह दर्द सर के लिए लाभदायक है। (इब्न माजह)

शिब्रन – एक गर्म दसतावर दवा

शिब्रम एक दूध वाला पौदा होता है जो नरकुल की तरह सीधा और बारीक गिरहदार होता है इसके पौदे की ऊंचाई लगभग हाथ भर होती है इसके ऊपर रोवां होता है, इसकी बाज़ किसमें ज़हरीली और बहुत घातक होती हैं, यह दवा वलग़ाम और सौदे को दसतों द्वारा निकाल देती है। इसका प्रयोग बिना किसी अच्छे हकीम की इजाज़त के नहीं करना चाहिए। इसके सिलसिले में खुद रसूल करीम सल्ल० का इरशाद है :

हज़रत अस्मा बिन्त उमैस रजियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि हज़रत रसूले खुदा सल्ल० ने उनसे मालूम किया तुम जुल्लाब के लिए क्या इस्तेमाल करती हो ? उन्होंने अर्ज़ किया शिब्रम " हुज़ूर ने फ़रमाया "यह गर्म गर्म है"। शिब्रम के मुकाबिले में हुज़ूर सल्ल० ने "सना" के इस्तेमाल को पसन्द फ़रमाया।

शहद में शिफ़ा है – अरबी भाषा में "शहद की मक्खी" को "नहल" कहते हैं, कुरआन शरीफ में एक पूरी सूरः इसी नाम से मौजूद है – सूरः नहल की आयत नं० ४६ में इरशाद इलाही है "फ़ीहे शिफ़ाउल लिन्नास" इसमें लोगों के लिए शिफ़ा (रोगों से मुक्ति) है, शहद के लाभप्रद होने के सम्बन्ध में यह एलान (घोषणा) लगभग चौदह सौ साल पहले किया गया था जो आज भी अपनी जगह एक हकीक़त (वास्तविकता) है और साइंस की पूरी दुनिया इसका इक़रार करती है।

शहद एक दवा मी है और ग़िज़ा भी, इस लज़ीज़ और मज़ेदार ख़ुराक की बड़े छोटे, हर देश और समाज के हर वर्ग के लोग छीन झपट कर इस्तेमाल करते हैं। क्यों न हो यह तिब्ब इलाही और तिब्बे नबवी है।

अहादीस नबवी सल्ल० की मशहूर किताब "जामे सग़ीर" में रवायत है जिसका अर्थ यह है कि शहद और कुरआन में हमारे लिये शिफ़ा है उससे फ़ायदह उठाना हमारे लिये ज़रूरी है।

हज़रत नाफ़े रज़ि की रवायत पर ध्यान दीजिए –

अर्थ – हज़रत इब्न उमर रज़ि० को जब भी कोई फोड़ा फुन्सी या और कोई चीज़ निकलती वह उस पर शहद लगाते और कलामुल्लाह (कुरआन शरीफ) की यह आयत तिलावत फरमाते "अल्लाह तआला उसके पेट से विभिन्न रंग का एक पेय (मशरूब) निकालता है, जिसमें लोगों के लिए आरोग्य (शिफ़ा) है।"

(हिन्दी रूपांतर–गुफ़रान नदवी)

पवित्र जीवन कैसे व्यतीत करें

(साफ़ सुथरी ज़िन्दगी कैसे गुज़ारें)

मुतीउर्रहमान औफ़

नया हिजरी साल शुरू हो चुका है, साल के ख़त्म पर हममें से हर एक को बीते हुए साल का हिसाब करना चाहिए और समीक्षा करनी चाहिए कि इस एक साल को उसने किस तरह गुज़ारा, इस पूरे समय में उससे क्या कोताहियां हुईं, कौनसी त्रुटियां हुईं पिछले सालों की अपेक्षा उसके अन्दर क्या बेहतरी आयी और अभी उसमें जिला (चमक) पैदा करने और निखार लाने के लिए कितने परिश्रम और ध्यान की आवश्यकता है? जिस प्रकार इन्सान को अपने दैनिक कामों का परीक्षण करना चाहिए उसी प्रकार साल के अन्त में बीते हुए साल का परीक्षण और आने वाले साल के लिये कामों की एक रूपरेखा तैयार करना चाहिए ताकि जीवन अल्लाह तआला की मरज़ी के अनुकूल गुज़रे और जो कोताहियां और त्रुटियां प्रवेश कर गई हैं उनकी तलाफ़ी (क्षतिपूर्ति) हो सके, अल्लाह तआला फ़रमाता है, अनुवाद : उसे वही मिलेगा जो उसने कमाया है और वह भुगतेगा भी वही जो उसने किया है। (बक़रह, २८६)

और ख़लीफ़ा आदिल (न्यायवान्) हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० ने फ़रमाया कि सवाल और मुहासबा (जांच पड़ताल) किये जाने से पहले अपना मुहासबा (जांच पड़ताल) करो और अपने कामों की समीक्षा करो, और क़ियामत (प्रलय) की पूरी तैयारी रखो –

कुरआन करीम, अनुवाद : जिस रोज तुम पेश किये जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदह (छुपी हुई, गुप्त) न होगी(अल–हाक़्क़ह–१८)

आने वाली ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिये एक मुसलमान भाई जनाब हुसैन सल्लामा ने रात दिन हफ़्ता, महीना साल और जीवन काल के लिए एक रूपरेखा और समय सारिणी तैयार की, अगर उसकी रोशनी में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी जाए तो इन्शाअल्लाह (तआला) अल्लाह तआला से कुरबत में इज़ाफ़ा होगा उसकी ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) प्राप्त होगी और समय का उचित प्रयोग होगा, और इनसान गुनाहों और कोताहियों से सुरक्षित रहेगा। यह लेख अरबिक मासिक पत्रिका (अल–मुजतमआ) में प्रकाशित हुआ है, हम इस समय केवल दिन रात के सिलसिले में उनके तैयार किये हुए समय सारणी से कुछ अंश प्रस्तुत कर रहे हैं, बाकी अंश बाद को आएंगे।

१. जहां तक हो सके, चाहे दो रकअत ही सही, रात को नफ़िल नमाज़ ज़रूर पढ़िये।

पवित्र कुर्आन अनुवाद : उनके पहलू विस्तरों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। फिर कोई नहीं जानता उसे, जो आंखों की ठंडक उनके लिये छिपा रखी गई है उसके बदले में देने के ध्येय से जो वे करते रहे होंगे। (अल–सजदह–१६–१७)

२. सहर (सुबह की नमाज़ से पहले) के वक़्त सैयदुलइस्तिग़फ़ार (मग़फ़िरत और बख़्शिश की सबसे बड़ी दुआ) के ज़रिये अल्लाह तआला से मग़फ़िरत तलब कीजिए।

अनुवाद – ऐ मेरे अल्लाह ! तेरे सिवा कोई मआबूद नहीं, तू मेरा ख़ालिक़ है और मैं तेरा बन्दह और तुझसे किये हुए अहद और वआदे पर पूरी कोशिश से जमा हूं अपने करतूतों से मैं तेरी पनाह (शरण) चाहता हूं, मुझे अपने ऊपर तेरी नेमतों का और स्वयं अपने गुनाहों का एक़रार है, बस मेरी मग़फिरत फ़रमा, गुनाहों को तेरे अलावा कोई बख़्शने वाला नहीं है।

निम्नलिखित आयत करीमा के अनुकूल अपने अन्दर विशेषताएं पैदा कीजिए और सदैव उस पर चलिये।

अनुवाद – ये लोग धैर्य से काम लेने वाले, सत्यवान और अत्यन्त आज्ञाकारी हैं, ये (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च करते और रात की अंतिम घड़ियों में क्षमा की प्रार्थनाएं करते हैं।

(आले इमरान–१७)

३. जहां तक मुमकिन हो फ़ज्र की नमाज़ में पहली सफ़ और तकबीर तहरीमा की पाबन्दी लाज़िमी (अनिवार्य) है हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया "अगर लोगों को अज़ान और पहली सफ़ की फ़ज़ीलत मालूम हो जाए और फिर उनको उसके लिये कुरआ

अन्दाजी (नाम निकालना) करनी पड़े तो लोग अवश्य कुरआ अन्दाज़ी करें। (बुख़ारी और मुस्लिम)

हज़रत आएशा रज़ि० से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया – नमाज़ फ़ज्र की दो रकअतें दुनिया और उसके अन्दर जो कुछ है उस सबसे बेहतर है। (मुस्लिम शरीफ़)

४. अधिक से अधिक कुर्आन शरीफ़ की तिलावत कीजिए, एक दिन में एक पारह से कम तिलावत न कीजिए। इसी के साथ खुशूअ (विनय) और ग़ौर फ़िक्र के साथ तिलावत की आदत डालिये, अल्लाह तआला का फ़रमान है : अनुवाद, या उससे कुछ अधिक बढ़ा लो और कुरआन को भली भांति ठहर ठहर कर पढ़ो, निश्चय ही हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं। (अल–मुज़्ज़म्मिल–५)

५. चाश्त की नमाज़ की आदत डालिये, चाहे दो ही रकअत पढ़िये, हुजूर सल्ल० चाश्त में आठ रकअत पढ़ा करते थे और आप सल्ल० ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को चाश्त की दो रकअत पढ़ने का हुक्म दिया, हदीस इस तरह है – "मुझे मेरे महबूब ने तीन बातों की वसीयत की, हर महीने तीन दिन के रोज़े, चाश्त की दो दो रकअतें और यह कि सोने के पहले मैं वित्र की नमाज़ पढ़ लूं।"

६. सुबह और शाम की दुआओं और तसबीहात की पाबन्दी कीजिए, और अपने भाइयों को वअज़ (सदुपदेश) और नसीहत की जिए और सूर्य अस्त के समय उनके लिये दुआ कीजिए, अल्लाह तआला का इरशाद है –

अनुवाद : अतः जो कुछ वे कहते हैं उस पर धैर्य से काम लो और अपने रब का गुणगान करो, सूर्योदय से पहले और उसके डूबने से पहले और रात की घड़ियों में तसबीह करो और दिन के किनारे पर भी ताकि तुम राज़ी हो जाओ। (सूरः ता०हा० १३०)

७. रोज़आना कम अज़ कम पांच मिनट सोने से पहले अपना मुहासबा (जांच पड़ताल) कीजिए, और तोबा के इरादे को पक्का कीजिए।

"बेशक अल्लाह तआला महब्बत रखते हैं तोबा करने वालों से और महब्बत रखते हैं साफ पाक रहने वालों से।" (अल–बक़रह–२२२)

८. अल्लाह तआला की कुदरत और उसकी मख़लूक़ात (दुनिया, समन्दर, आस्मान, पहाड़, दरख्त) पर सच्चे दिलसे एक बार ही सही फ़िक्र गौर की निगाह डालिये ।

"हमारे रब ! तूने यह सब बेकार नहीं बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।" (आल इमरान–१९१)

९. पूरे दिन वजू पर पाबन्दी की जिये और जब वजू टूट जाए तो फ़ौरन फिर से वजू कीजिए, वजू मोमिन का हथियार है, जैसा कि इरशाद नबवी है।

१०. यदि आप का कोई विशेष विषय हो तो उसका अध्ययन कीजिए चाहे एक पृष्टि ही क्यों न पढ़िये, इरशाद रब्बानी है :

अनुवाद : "पढ़ो, हाल यह है कि तुम्हारा रब बड़ा ही उदार है।" (अल–अलक–३)

११. इक्सर साइज़ और कसरत कीजिए और उसका जो नियम आपने अपना रखा हो उसके अनुकूल कम से कम दस मिनट अवश्य इक्सर साइज़ कीजिए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० से रवायत है, रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "ताक़तवर मोमिन कमज़ोर मोमिन से ज़ियादह बेहतर है और अल्लाह को ज़ियादा पसन्द है और बेहतरी दोनों में है।" (मुस्लिम शरीफ़)

१२. देर तक मत जागिये बल्कि जल्दी सो जाइये और जल्दी उठिये, यही दस्तूर नबवी और आप सल्ल० का तरीक़ह (नियम) है।

१३. हर रात अपनी नियत को अल्लाह तआला के लिये ख़ालिस (निष्केवल) कर लीजिए।

"और उन्हें आदेश भी बस यही दिया गया था कि वे अल्लाह की बन्दगी करें निष्ठा एवं विनय शीलता को उसके लिये विशिष्ट करके, बिलकुल एकाग्र हो कर, और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और यही है सत्यवादी समुदाय का धर्म। (अल– बय्यि नं. ५)

१४. एख़्लाक़ी और अ़मली एतिबार से अल्लाह के ख़ास बन्दों और मुमताज (प्रतिष्ठित) बन्दों की इत्तिबाअ (अनुकरण) कीजिए और जब भी मौक़ाअ (अवसर) मिले उन्हीं के पग चिन्हों पर चलिये।

अनुवाद : "(ये पैगम्बर) वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी (सो ऐ पैगम्बर) तुम उनकी राह पर चलो।" (लोगो से) कह दो मैं (कुरआन पर) तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं मांगता, यह (कुरआन) तो दुनिया जहान के लोगों के लिय नसीहत (उपदेश) है। (अल–अनआमि–९०)

१५. अपने वास्तविक और

(शेष पृ. २६ पर)

उम्मत की बीमारी और उसका इलाज

अब्दुल मुईद नदवी

आज उम्मते मुस्लिमा जिस बीमरी का शिकार है उसका रोगनिर्णय (तशखीश) चौदह सौ साल पहले कर दिया गया था। और स्वस्थ होने का नुसख़ा भी उम्मत के हवाले कर दिया गया था। जब तक लोग इससे लाभ उठाते रहे रूहानी कूवत (अध्यात्मक शक्ति) से मालामाल रहे, दुन्या के इमाम (अगुवा) बने रहे और मिथ्या के लिए मौत का पैग़ाम, लेकिन बाद के लोगों ने उससे मुंह मोड़ लिया तो दुन्या की कौमों ने उनके साथ वहीं व्यवहार किया जो दुष्टात्मक बीमारियों के जीवाण किसी कमज़ोर शरीर से सुरक्षात्मक शक्ति समाप्त होने पर किया करते हैं जिस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यूं फ़रमाया है, "दुन्या की कौमें तुम पर इस तरह टूट पड़ेंगी जैसे भूखे खाने पर टूटते हैं।" यह अपमानजनक युग मुसलमानों की कम संख्या के कारण न होगा बल्कि हमारी संख्या की अधिकता से धरती का सीना चरचरा रहा होगा और झाग की तरह साधारण हवा से भी हमारा वजूद मिट जाएगा। हुजूर (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित सहाबा (रज़ि०) ने पूछा ऐसा कब होगा ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया जब तुम में वहन पैदा हो जाएगा। पूछा गया वहन क्या है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "हुब्बुद्दुन्या व कराहतुल मौत" (दुन्या से महब्बत और मौत से नफरत) वास्तव में दुन्या में बड़ाई और मौत से भयभीत न होना दोनों का चोली दामन का साथ है। आज हमारे कलेजे मौत का नाम सुन कर मुंह को आने लगते हैं, पांव कांपने लगते हैं और जीने की इच्छा जवान हो जाती है। इसी चिन्ता में हमारी विशेषता पर पानी फेर दिया है। उस समय को याद कीजिए जब हमारे मुजाहिदीन (धर्म योद्धाओं) को शराबियों की शराब से अधिक मौत प्रिय थी। यह कफन ओढ़े हुए दुश्मनों की पक्तियों में मौत तलाश करते फिरते थे। वास्तव में अल्लाह के रास्ते में मौत से मुंह चुराना मुनाफ़िक़ीन (कप्टाचारियों) का चलन है। हमारे सामने उहद के जंग की मिसाल है कि कप्टियों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबइ बिन सलूल ने अपने टोले के साथ मौत से भयभीत होकर भाग खड़ा हुआ था। इसके विपरीत सहाब–ए–किराम रज़ि० किस प्रकार जान की भेंट पेश करने में एक दूसरे से आगे निकल जाना चाहते थे। हुजूर सल्ल० शहादत की तमन्ना किया करते थे। हज़रत अबू बक्र रज़ि० के अतिरिक्त और तीनों खुल्फ़ाए राशिदन ने जामे शहादब नोश फ़रमाया (शहीद हुए) हज़रत ख़ालिद रज़ि० शहादत की तमन्ना में मौत की हर वादी में घुसे लेकिन नसीब नहीं हुई।

शहादत का जज़्बा जिस प्रकार मर्दों, औरतों और बच्चों में था, इतिहास इसका उदाहरण पेश नहीं कर सकता।

हज़रत फारूक रज़ि० पूरे अरब प्राय द्वीप और अफरीक़ा के बड़े क्षेत्रों के प्रशासक हैं लेकिन निजी जीवन में वही बोरियानशीनी (साधारण जीवन) का हाल है। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का घरेलू जीवन और उनके कपड़ों का पैवन्द आज भी इतिहास के आइने में देखे जा सकते हैं। भारतीय इतिहास का उस स्वर्ण युग का पन्ना उलटिये जब मर्दे मोमिन टीपू सुलतान ने अपमान के जीवन पर सम्मान की मौत को प्रधानता दी थी।

आज पूरी उम्मत सांसारिक सुन्दरता व सज्जा और वासना की अभिलाषा में लिप्त है, वह अपनी तुच्छ इच्छा की पूर्ति के लिए दीन के महत्वपूर्ण कार्यों और दायित्वों को कुर्बान करने में तनिक संकोच महसूस नहीं करती।

अब इसे खुद फैसला करना है कि सम्मान का जीवन चाहिए या अपमान की सुखसुविधा? यदि दुन्या के साथ आख़िरत की सफलता चाहिए तो आज ही से दुन्या की महब्बत और मौत से नफ़रत की बीमारी से छुटकारा पाने का तहैया कर लें।

कर जवानी में इबादत
काहिली अच्छी नहीं
जब बुढ़ापा आ गया
कुछ बात बन पड़ती नहीं
हाथ में और पांव में
यह ज़ोर यह क़ूवत कहां
नुत्क़ में यह बात
बीनाई में यह ताक़त कहां
है बुढ़ापा भी ग़नीमत
गर जवानी हो चुकी
यह बुढ़ापा भी न होगा
मौत जिस दम आ गई

तौबा की अहमियत

ईशा अ़लीग

अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों और पाक रहने वालों को मह़बूब रखता है।

तौबा का मतलब है अपने को गुनाहों से अलग कर लेना और अल्लाह तआ़ला से गुनाहों की मुआ़फी चाहना। तौबा की तीन शर्तें (पण) हैं।

१. गुनाह का एह़सास हो, साथ ही अफ़्सोस और शर्मिन्दगी हो।

२. फ़ौरन अपने को गुनाह से अलग कर लें। कोई औ़रत बेपर्दा घूमना न छोड़े और बे पर्दगी से तौबा करती रहे या कोई मर्द दाढ़ी मूंडता रहे और दाढ़ी मूंडने के गुनाह से तौबा करता रहे तो इस तौबा सै कोई फ़ायदा न होगा।

३. दिल से पक्का इरादा करे कि आइन्दा अब गुनाह न करूंगा।

४. इन तीन शर्तों के साथ जो तौबा करेगा वह गुनाहों से पाक हो जायेगा। लेकिन यहां यह ध्यान में रहे कि जिस गुनाह में किसी दूसरे को नुक़्सान पहुंचा है जैसे किसी का माल चुरा लेना या जबरन ले लेना या किसी को गाली देना, किसी की ग़ीबत करना, किसी को मार देना यानी वह गुनाह जिनमें बन्दों का ह़क़ होता है। ऐसे गुनाह के तौबा के साथ जिसका जो ह़क़ है उसका बदला देना या ह़क़ वाले से मुआ़फ़ी ह़ासिल कर लेना भी ज़रूरी है।

यह बात भी याद रहे कि सच्चे दिल से तौबा के बाद इन्सान होने के नाते फिर गुनाह हो जाये तो फिर तौबा करे तौबा चाहे जितनी बार टूटे तौबा करने में देर न करे। ऊपर की शर्तों के साथ अगर तौबा की तौफ़ीक़ मिल गई तो तौबा क़बूल होगी अलबत्ता बार बार तौबा तोड़ने से ख़तरा है कि फिर तौबा की तौफ़ीक़ न मिले।

तौबा के सिलसिले में फ़िरऔ़न वह वाकिआ़ याद कर लेना चाहिए। कि जब अल्लाह तआ़ला ने समुन्दर में रास्ता निकाल कर बनी इस्राईल को बचा दिया और जब फ़िरऔ़न अपनी फ़ौज के साथ उसी रास्ते में उतरा तो पानी दोनों तरफ़ से मिल गया। और सब डूब गये। डूबते वक़्त फ़िरऔ़न कहने लगा मैं ईमान लाता हूं कि सिवाय उसके जिस पर बनू इस्राईल ईमान लाये हैं कोई और मअ़बूद (उपास्य) नहीं। कहा गया अब ईमान लाता है और इससे पहले नाफरमानी करता रहा ! मतलब यह कि जब बिल्कुल आखिरी वक़्त आ जाये और अगली दुन्या की निशानियां दिखने लगें तो तौबा क़ुबूल नहीं होती, लिहाज़ा तौबा करने में देर न करके जल्दी कर लेना चाहिए।

ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो गुनाह करते रहें और जब मौत आ खड़ी हो तो कहें अब मैं तौबा करता हूं(४:१८)

> बाज़ आ बाज़ आ गर सद बार
> तौबा शिकस्ती बाज़ आ
> ई दरगहे मा महरूमी
> नेस्त बाज़ आ

इमाम अहमद बिन हन्बल

मु० अह़सन

इमाम अहमद बिन हन्बल रबीउल अव्वल १६४ हिजरी में बगदाद में पैदा हुए, वह खालिस अरबिय्युन्नसल थे, और आप का तअ़ल्लुक कबील–ए–शैबान से था, विलादत से पहले उनके वालिद (पिता) का इंतिकाल हो गया था, (माता) मां ने बड़ी हिम्मत से उनकी देख भाल की, बचपन में कुरआन मजीद हिफ्ज़ किया, और जबान की तालीम हासिल की, दीनी उलूम में उन्होंने हदीस की तरफ बड़ा ध्यान दिया। सबसे पहले काजी अबू यूसुफ से हदीस पढ़ी, फिर चार वर्ष तक बगदाद में इमामे हदीस हसीम बिन बशीर से इल्म हासिल करते रहे। इसी बीच में मशहूर इमामे हदीस अब्दुर्रहमान बिन मेहदी वगैरह से ज्ञान प्राप्त किया। इमाम अहमद बिन हंबल खुद कहते हैं कि मैं हदीस सुनने के लिए इतने सवेरे जाने का इरादा करता कि मेरी मां मेरा दामन पकड़ लेती कि इतना ठहर जाओ कि अज़ान हो जाए और कुछ उजाला हो जाये, बगदाद से फारिग होकर उन्होंने, बसरा, हिजाज, यमन, शाम और जजीरा का सफर किया, और हर जगह के मुहद्दिसीन से इस्तिफ़ादा किया, चालीस वर्ष की उमर (आयु) में गालिबन २०४ हिजरी में उन्होंने हदीस का दरस देना शुरू किया, शुरू ही से उनके दरस के सुनने वालों की तादाद पांच पांच हजार होती थी, जिनमें पांच–पांच सौ लिखने वाले होते थे,

पुस्तकों का परिचय

गुफ़रान नदवी

"इस्लामिक शिक्षा और मुस्लिम समाज"

मुजाहिदे इस्लाम, मशहूर आलिमे दीन मौलाना शाहमुहम्मद इस्माईल रह० की जगत प्रसिद्ध किताब ''तकवियतुल ईमान'' का हिन्दी संस्करण है, हिन्दी अनुवादक मौलाना मु० इम्तियाज़ अहमद नदवी हैं, हुब्बा हिन्दी एकाडमी अ़ली नगर रायबरेली (यू०पी०) की ओर से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है।

किताब का मुख्य विषय इस्लाम का महत्वपूर्ण और बुन्यादी अकीदः "तौहीद" की व्याख्या और उसके विरुद्ध समाज में फैले हुए नानाप्रकार के "शिर्क" का पूर्ण वर्णन और उसकी निशांदही ,

किताब के शीर्षक इस प्रकार हैं –

प्रथम अध्याय – तौहीद तथा शिर्क के बयान में

प्रथम परिच्छेद : शिर्क से बचाव के बयान में

द्वितीय परिच्छेद : इल्म में शिर्क की बुराई के बयान में

तृतीय परिच्छेद : अधिकार में शिर्क की बुराई के बयान में

चतुर्थ परिच्छेद : इबादतों में शिर्क की बुराई के बयान में

पंचम परिच्छेद : आदत तथा काम काज में शिर्क की बुराई के बयान में।

इस्लाम जगत में प्रख्यात विचारक एवं विद्वान मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी रह० लिखते हैं :–

"आपके हाथों में आने वाली किताब तकवियतुल ईमान एक ऐसी पुस्तक है जो अस्ल तौहीद और उसकी दावत को बेलाग तरीके से बयान करने की पहचान बन गई है।

हिन्दुस्तान में अल्लाह तआला ने इस पुस्तक से इतनी बड़ी संख्या में फ़ाइदा पहुंचाया जिसकी गिनती असंभव है।

किताब से प्रभावित होकर हमारे डॉ० हारून रशीद साहब एडीटर "सच्चा राही" लिखते हैं –

"इस किताब ने मुस्लिहीन व मुरब्बीयीन की आंखें खोल दीं उनको नफ़्सियाती उस्लूब (मनोविज्ञानिक शैली) दिया, जिसने भी यह किताब पढ़ी वह किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ माइल हो गया और शिर्क व बिदअत और फुजूल रस्मों से पूरी तरह बचने लगा।"

यद्यपि यह किताब सौ साल पहले लिखी गई परन्तु इसके लाभप्रद और महत्वपूर्ण होने में कोई सन्देह नहीं, हिन्दी भाषियों के लिए यह बहुमूल्य उपहार है, मौलाना इम्तियाज़ अहमद नदवी धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने इसका हिन्दी अनुवाद करके समय की एक बड़ी आवश्यकता पूरी कर दी किताब की भाषा सरल और सादा हैं, किताब चूंकि "तौहीद" जैसे मौलिक और मुख्य विषय से संबंधित है इसलिए इसका पढ़ना और समझना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है। हम सबका यह कर्तव्य बनता है कि किताब को हाथों हाथ लें और दूसरों तक पहुंचाएं, किताब की छपाई और गेटअप बहुत ही सुन्दर है।

किताब का मूल्य ६० रूपये है।

किताब आप निम्न लिखित जगहों से प्राप्त कर सकते हैं।

१. कमतबः उसमानिया, अलीनगर, रायबरेली

२. मकतबः नदविया, नदवा लखनऊ

३. मकतबः इस्लाम गोइन रोड लखनऊ

नमाज़ की किताब

पांच वक्त की नमाज़ हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सीख ही कर फ़रमाया था : "हां इस्लाम में उसका कोई हिस्सा नहीं जो नमाज़ न पढ़े,

नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है अ़रबी में पढ़ा जाता है, चाहे किसी को अ़रबी ज़बान न आती हो और वह यह न समझता हो कि जो कुछ वह नमाज़ में पढ़ रहा है उसका मतलब क्या है। फिर भी नमाज़ अ़रबी में पढ़ी जायेगी। अलबत्ता आप ग़ुस्ल और वुज़ू कैसे करें, अज़ान कैसे कहें, नमाज़ कैसे पढ़े हर रकअ़त में पढ़ी जाने वाली सूर–ए–फ़ातिहा का मतलब क्या है रुकूअ़ सजदा आदि में जो कुछ कहते हैं उसका अर्थ क्या है इन सब बातों को हिन्दी में जानने के लिए पढ़िये डा० हारून रशीद की लिखी "नमाज़ की किताब" क़ीमत सिर्फ ६ रूपये । नदवी बुक डिपो, पोस्ट बाक्स नं० ६३, नदवा लखनऊ पिन – २२६ २०७

यह किताब शोब–ए–दावत व इर्शाद से मुफ़्त मिल सकती है।

सत्कार होना चाहिए

हैदर अ़ली नदवी

सपना आज़ादी का अब साकार होना चाहिए
अम्न से जीने का अब अधिकार होना चाहिए

कब तलक मरती रहेगी भूखों जनता देश की
अन्न का अब देश में भण्डार होना चाहिए

खिचड़ी सरकारों से कुछ भी काम हो पाता नहीं
देश में स्थिर कोई सरकार होना चाहिए।

कब तलक ढोती रहेंगी बूढी हड्डी देश को
अब तो यां पी०एम० युवा दमदार होना चाहिए।

आंख उठाकर देश को दुशमन कोई देखे अगर
सब तरफ से साथियो ललकार होना चाहिए

दुल्हनों के जो जलाए माल व दौलत के लिए
बन्द ऐसा जेल में परिवार होना चाहिए

जल रहा कश्मीर है अफ़ग़ान और इराक भी
बन्द अब मानव पे अत्याचार होना चाहिए

मार डाला सैकड़ों बच्चों को भी गुजरात में
कातिलों को अब सलाखों पार होना चाहिए।

मांगने से भीख हक की मिल नहीं सकती कभी
हाथ में अब दोस्तो तलवार होना चाहिए

एकता को गर हमारी तोड़ने आए कोई
उस फसादी पर कड़ी फटकार होना चाहिए

एकता और प्रेम से आगे बढ़ते जाएं हम
भाई चारे का सदा व्यवहार होना चाहिए।

रिश्वत घोटाले और गबन जो कर रहे हैं देश में
इन लुटेरों पर तो अब धिक्कार होना चाहिए।

हैदर यॉं आदर्श जीवन सबका होना चाहिए
सत्यवादी जीवों का सत्कार होना चाहिए।

तन मन धन सब अर्पित है

क़ारी हिदायतुल्लाह सिद्दीक़ी

भूत काल की हर हर घटना इस हृदय पर अंकित है
दुखयारों की आह से होना भस्म समझ लो निश्चित है।।

धन की लोभी दुन्या सारी मन उज्वल फिर कैसे हो।
किस को कैसा समझा जाये हृदय सब का वंचित है।।

अमरीका की दहशत गर्दी दुन्या में प्रमाणित है।
उमर उसामा तालिबान की दहशतगर्दी कल्पित है।।

नई दुल्हन को आग लगावें बेटी अपनी भूले हैं।
मानव के इन कर्मों से तो दानव भी अब लज्जित है।।

इसको मारा उसको काटा आग लगाई गुलशन में।
मनमानी जो चाहो कर लो न्याय का इक दिन निश्चित है।।

पाप करो या पुण्य करो तुम भोगो गे ख़ुद अंतिम दिन।
पढ़ कर देखो तो क़ुरआं तुम, इसमें सब कुछ अंकित है।।

झूट दग़ा मक्कारी चोरी, व्यभिचार और मदिरा पान।
दूर ही रहना इन सब से कि इनमें हर इक वर्जित है।।

न्याय हुआ उत्कोच का भूखा निर्धन पीड़ित रोता है।
दो फ़सली बातों से तुम्हारी, मानवता भी विकलित है।।

मन्दिर मस्जिद निर्मित हैं पर कोई न आवे पूजन को।
शैख़ अकेला है मस्जिद में, मन्दिर में बस पण्डित है।।

मुख से बोलो मीठी बोली कानों में रस घोलो तुम।
लोग कहें ये प्रेम की मद से, कौन है जो उनमादित है।।

प्रेम करें हम धर्म से अपने चलें हम अपने मज़हब पर।
प्रेम देश का प्यारे मेरे हृदय पर उल्लेखित है।।

राह, हिदायत, को दिखलाना सीधी, इस की विन्ती है।
मेरे ख़ालिक़ अल्लाह तुझको, तन, मन, धन सब अर्पित है।।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

●मिस्र में पहले इस्लामी टेलीविजन चैनल की स्थापना:

मिस्री समाचार एजेंसियों के अनुसार इस्लाम की ऐतिहासिक यूनिवर्सिटी "जामेअः अज़हर" प्रथम इस्लामी टेलीविजन चैनल की स्थापना कर रही है। समाचार सूत्रों के अनुसार इस चैनल का उद्देश्य दीने इस्लाम के बारे मे इस्लाम दुशमनों के झूठे प्रोपगण्डे का तोड़ करना और संसार के सामने इस्लाम की सही और सच्ची तस्वीर पेश करना होगा। जामेअः अज़हर की तरफ से चैनल की स्थापना के आदेश जारी हो चुके हैं। जामेअः अज़हर के चांसलर डा० अहमद उमर हाशिम ने एलान किया है कि यूनिवर्सिटी के माहिरीन (विशेषज्ञों) की कमेटी का मिस्री सूचना मंत्रालय, मिस्री रेडियो और टेलीविजन एसोसियेशन के विशेषज्ञों से सम्पर्क स्थापित है। उन्होंने कहा कि इन कोशिशों का उद्देश्य एक ऐसे आधुनिक टीवी चैनल की स्थापना है जो इस्लाम को वर्तमान युग में उसकी वास्तविक विशेषताओं के साथ परिचय कराए अर्थात इस की सहनशीलता और अमन व सलामती की पालिसीयों को आधुनिक भाषाओं और साधनों के द्वारा पेश करे। उन्होंने कहा यह चैनल इस्लाम के दुश्मनों के प्रोपगण्डे को भी जवाब देगा और उन पर स्पष्ट करेगा कि इस्लाम वास्तव में प्रेम शान्ति और सुरक्षा का धर्म है आतंकवाद हिंसा और साम्प्रदायिकता का नहीं बल्कि इसकी तालीम दुन्या के तमाम इंसानी गिराहों के लिए अमन व शान्ति का ज़ामिन है केवल मुसलमानों के लिए नहीं।

अज़हर के उलमा की एक कमेटी उन तमाम विषयों को एकत्र कर रही है जिन के बारे में इस्लाम विरोधी भ्रम पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा इन का संतोषजनक उत्तर दिया जा सके। इनका जवाब पुस्तिका के रूप में छाप कर दुन्या के विभिन्न इस्लामी संस्थाओं को भी भेजा जाएगा। ताकि वह भी इन से लाभान्वित होकर पश्चिमी देशों की ओर से किये जाने वाले इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ प्रोपगण्डे का जवाब दे सकें।

●अमरीका और यूरोप के एक सर्वेक्षण के अनुसार —इराक़ युद्ध से आतंकवाद को बढ़ावा मिला :— अमरीका और यूरोप के बडे देशों का मानना है कि इराक युद्ध ने दुन्या में आतंकवाद के ख़तरे को बढ़ा दिया। इस बात का ज्ञान एसोसिएटेड प्रेस नामी न्यूज एजेंसी के द्वारा कराए गए सर्वे में हुआ है। सर्वे के अनुसार अमरीका में लोग दो विचारों में बटे हुए हैं। एक ग्रुप का मानना है कि इराक युद्ध से दुन्या विशेषकर अमरीका को खतरा बढ़ गया है। अधिकांश लोग इसी विचार के हैं फिर भी दूसरा ग्रुप यह मानता है कि इससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ा है। यह सर्वे ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, इटली, जर्मनी मैक्सीको, स्पेन और अमरीका में कराया गया।

●सुबूत ही नहीं मिल रहे अमेरिका को— इराक़ के पूर्व राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन को ज्यादतियों और दमन का दोषी ठहराने के लिए अमेरिका को उनके खिलाफ सुबूत और गवाह ढूढें नहीं मिल रहे हैं।

ब्रिटिश अखबार टाइम्स ने एक ब्रिटिश अधिकारी के हवाले से बताया है कि सरकारी अभियोजकों को सद्दाम के खिलाफ मामला तैयार करने के लिए न तो सुबूत मिल रहे हैं और न ही गवाह। इसके चलते उनको यह साबित करने में कठिनाई आ रही है कि पूर्व राष्ट्रपति लोगों के दमन के अपराधी हैं।

इस अज्ञात अधिकारी ने बताया कि हालांकि अमेरिकी नेतृत्व वाले गठबन्धन ने सद्दाम के पूर्व शासन से जुड़े ५५ लोगों की वांछितों की सूची में ४४ लोगों को पकड़ लिया है, लेकिन उनमें से किसी को भी गवाही के लिए नहीं बुलाया जा सकेगा। अधिकारी ने कहा कि लोग डर रहे हैं। सद्दाम भले ही हिरासत में हैं लेकिन हिरासत में लिए गये बाक़ी लोग पिछले अनुभवों के आधार पर यह जानते हैं कि अगर उन लोगों ने मुंह खोला तो उनके परिवार वालों से इस बात का बदला लिया जायेगा।

> हज़रत उक़बा बिन आमिर से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो यक़ीनन उमर बिन ख़त्ताब होते। (तिर्मिज़ी)